सेनानी

अंक -11
ई-पत्रिका

वर्ष 2020-2021

उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय,भारत सरकार

जी.बी.ब्लॉक.,प्लॉट सं-6,सेक्टर-3,साल्ट लेक,कोलकाता-700097

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता

हिन्दी गृह-पत्रिका प्रकाशन पुरस्कार

*****

तृतीय पुरस्कार

प्रशस्ति-पत्र

वर्ष 2019 - 2020 के दौरान सर्वोत्तम गृह-पत्रिका के प्रकाशन के लिए समिति द्वारा कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बैरकपुर द्वारा प्रकाशित सेनानी को तृतीय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

आर मुनिराजु	मानस विश्वास
(आर. मुनिराजु)	(मानस विश्वास)
सदस्य सचिव	अध्यक्ष

सेनानी

अंक -11
वर्ष 2020-21

सेनानी

अंक- 11
गृह पत्रिका वर्ष 2020-21
(केवल विभागीय परिचालन हेतु)

संरक्षक
श्री अक्षय काला
अपर आयुक्त

मुख्य संपादक
श्री सैकत मण्डल
उप निदेशक(प्रभारी राजभाषा)

उप संपादक
श्रीमती अपर्णा घोष
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कार्यकारी संपादक
श्री पोलीकार्प सोरेंग
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री बिनय कुमार शुक्ल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पत्रिका डिजाइन एवं ई-प्रारूपण
श्री बिनय कुमार शुक्ल

प्रकाशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
भारत सरकार
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट-VI,सेक्टर-III,
सॉल्ट लेक, कोलकाता -
700097.पश्चिम बंगाल
दूरभाष : 033-23350052
ई-मेल : dir-bpore@esic.nic.in

क्र.सं	विषय	रचनाकार	पृष्ठसं.
1	संदेश	मुख्यालय	04-05
2	संरक्षक की कलम से	अक्षय काला	06
3	मुख्य संपादक की कलम से	सैकत मण्डल	07
4	राजभाषा कार्यान्वयन की वार्षिक रिपोर्ट		08
	लेख		
5	टीस - लघु कहानी	अपर्णा घोष	09
6	कंप्यूटर के लिए सशक्त एंटीवायरस चयन की समस्या	बिनय कुमार शुक्ल	13
7	भारत की शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता	आशुतोष मिश्र	16
9	सरकारी कार्यालयों में वर्क फ्रॉम होम - लाभ एवं नुकसान	शुभंकर मंडल	18
10	कोरोना बचाव एवं चिकित्सा में क.रा.बी.निगम का योगदान	विकास कुमार साव	20
11	सागर की गोद में कुछ पल	श्रीतमा चक्रवर्ती	22
12	हिल्सा मछली	विप्रजीत विश्वास	24
13	बांग्ला साहित्य के धरोहर	सौमिक मिश्र	25
14	भ्रष्टाचार	अर्णव बनर्जी	26
15	चित्र दीर्घा		27
16	भ्रष्टाचार	राकेश रोशन	30
17	हरी सब्जी है गुणों का खजाना	पोलीकार्प सोरेंग	31
18	किसी को उसके पेशे से पहचान न दें	श्याम प्रसाद सेन	36
19	डायरी के पन्नों से	अर्चिष्मान घोष	40
20	वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रभाव	मुकेश कुमार	41
21	कोरोना और होमियोपैथी उपचार-मेरी नज़र में	विश्वनाथ तालुकदार	43
22	आत्म विश्वास	सौमिक मिश्र	48
23	बच्चों की तूलिका से		49

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारादि लेखकों के निजी हैं। प्रकाशित रचनाओं के लिए संबंधित लेखक/कवि ही जिम्मेदार है, संपादकगण या संपादक मंडल नहीं।

मुख्यालय,कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग, नई दिल्ली-110002

अनुराधा प्रसाद(I.D.A.S)
महानिदेशक

संदेश

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि पिछले दस वर्षों से उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की गृह पत्रिका 'सेनानी' का लगातार प्रकाशन हो रहा है और अब इसका ग्यारहवाँ संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिका का सतत प्रकाशन इस बात का द्योतक है कि कार्यालय में राजभाषा नीति का सुचारु रूप से कार्यान्वयन हो रहा है तथा इस कार्य में उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर के अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित रूप से बढ़-चढ़ कर योगदान दे रहे हैं। उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के समस्त अधिकारियों एवं कार्मिकों के सतत योगदान का ही फल है कि वर्ष 2018-19 के दौरान निगम मुख्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों में से उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर को प्रथम पुरस्कार से तो नवाजा ही गया, साथ ही इसकी पत्रिका 'सेनानी' को भी लगातार दो वर्षों से श्रेष्ठ पत्रिका की श्रेणी का पुरस्कार भी प्राप्त हो रहा है। मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि 'सेनानी' को केवल निगम मुख्यालय ही नहीं वरन कोलकाता(उपक्रम) द्वारा भी लगातार विजेताओं की श्रेणी में चयनित किया जा रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर के बढ़ते चरण सराहनीय हैं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आगामी वर्षों में भी राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर नित नए कीर्तिमान स्थापित करेगी।

शुभकामनाओं सहित,

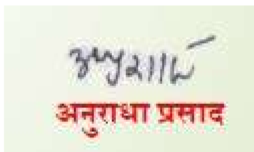

सेवा में,

श्री अक्षय काला
अपर आयुक्त
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
जी बी ब्लॉक,प्लॉट संख्या 6, सेक्टर-3
साल्ट लेक, कोलकाता-700097 पश्चिम बंगाल

मुख्यालय,कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग, नई दिल्ली-110002

एम के शर्मा
बीमा आयुक्त(राजभाषा)

संदेश

सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा में गृह पत्रिका का प्रकाशन केवल एक औपचारिकता मात्र ही नहीं है, यह कार्मिकों में रचनाधर्मिता के सुप्त गुण को जगाने का एक सशक्त माध्यम भी है। मन की गहराइयों में सुप्त विचारों को रोशनाई से कागज पर उकेर उसे प्रकाशित करवाना तो सभी चाहते हैं पर उसके लिए साधन और साध्य की कमी हमेशा ही रचनाकार बनने के सपने को पुनः सुप्त कर देती है । ऐसे में कार्यालय की गृह पत्रिका में अपनी रचनाओं को प्रकाशित करवाना केवल गौरव का ही विषय नहीं है, यह भाषा की सेवा का भी एक अंग है । जब आप अपने विचारों को शब्दों में पिरोकर कागज पर उकेर देते हैं, यहीं से आपकी रचनाकार बनने की यात्रा आरंभ हो जाती है । कार्यालय की पत्रिका का भी यही उद्देश्य होता है। जब आपके विचार प्रकट होने लगें, तो समझिए कि आप भाषा के और भी करीब आने का प्रयास करते हैं। वह भाषा आपकी मातृ भाषा हो सकती है, राज भाषा हो सकती है, अन्य भाषा भी हो सकती है । एक बार भाषा के मूल आत्मा की पहचान करते ही आप राष्ट्र की भाषा और राजभाषा से नजदीकी बढ़ाना प्रारंभ कर देते हैं और यहीं से राजभाषा की भी सेवा प्रारंभ हो जाती है । यहीं से प्रेरणा और प्रोत्साहन से हटकर राजभाषा अपनाकर आप राष्ट्र सेवा के मार्ग प्रशस्त होने लगते हैं और फिर राजभाषा कार्यान्वयन का अंकुर प्रस्फुटित हो उठता है जो सतत चलता रहता है, आदत में, शौक में और आपके कार्यों में । बस एक प्रयास की आवश्यकता है, प्रारंभ तो कीजिए।

शुभकामनाओं सहित,

म शर्मा
एम.के. शर्मा

सेवा में,

श्री अक्षय काला
अपर आयुक्त
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
जी बी ब्लॉक,प्लॉट संख्या 6, सेक्टर-3
साल्ट लेक, कोलकाता-700097,पश्चिम बंगाल

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,सेक्टर-3,साल्ट लेक,कोलकाता-700097

संरक्षक की कलम से..

वर्ष 2021 शुरू से ही आपदाओं का काल रहा है जिसमें वैश्विक, स्थानीय और राष्ट्रीय कई प्रकार की आपदाएँ आईं। इन आपदाओं में 'कोरोना' ने मानवीय मूल्यों,जीवन, रहन-सहन, सोच सहित मानव के जीवन के हर पहलू में न जाने कितने रंग बदल दिए, कितने रंगों को हर लिया। पर जीवन चलने का नाम है तथा 'चरैवेती' का सिद्धांत ही जीवन को जीवंत कर सकती है।

जीवन के इस परिवर्तन ने कार्यालय की कार्यप्रणाली में भी काफी परिवर्तन ला दिया है। वर्क फ्रॉम होम, डिजिटल माध्यम से हर काम और न जाने क्या-क्या। डिजिटलीकरण की राह पर बढ़ते हुए इस वर्ष सेनानी को डिजिटल प्रारूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है। 'सेनानी' का नवीनतम डिजिटल अंक आपकी सेवा में प्रस्तुत है। विभिन्न कलेवरों से सुसज्जित इसका ग्यारहवाँ अंक उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़ी समस्त गतिविधियों के विवरण को सँजोये हुए है। कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रक्रिया को मूर्त रूप देने के लिए वर्ष भर विभिन्न प्रकार की गतिविधियां चलती रही हैं। 'ग' क्षेत्र का कार्यालय होते हुए भी हिंदीतर भाषी कार्मिकों द्वारा अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में किया जाना अभूतपूर्व बात है। और फिर इसके लिए किसी में भी किसी प्रकार के पारितोषिक की चाहत नहीं झलकती है वरन लोग स्वेच्छा से अधिकाधिक कार्य हिंदी में करना पसंद करते हैं और करते भी हैं। अधिकारियों तथा कार्मिकों में राजभाषा के प्रति समर्पण की यह भावना ही कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को सर्वोच्च शिखर पर ले जा रही है।

इस अंक के बारे में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

(अक्षय काला)
अपर आयुक्त

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,सेक्टर-3,साल्ट लेक,कोलकाता-700097

संपादक की कलम से -

सम्माननीय पाठक वृंद,

आशा है नए रूप-रंग एवं शैली में सेनानी का यह अंक आपको भा रहा होगा। वैश्विक महामारी कोरोना ने पंख क्या फैलाया, विश्व के हर मनुष्य के जीवन शैली के साथ ही मनुष्य के जीवन से संबंध रखने वाली हर वस्तु और व्यवहार की सामग्री में आमूल चूल परिवर्तन ला खड़ा कर दिया। उसी परिवर्तन का ही यह प्रभाव है कि हर वर्ष जो पत्रिका डाक से चलकर आप तक पहुँचती थी वह इस वर्ष आभाषी दुनिया के सागर से होते हुए मेल के माध्यम से पहुँच रही है। जीवन के हर रंग में डिजिटलीकरण का प्रभाव भी खूब बढ़ा है। अब जब बीमारी आई है तो उससे लड़ने वाले योद्धा भी तो होंगे ही। हर तरफ योद्धाओं का सम्मान एवं महिमामंडन भी हो रहा है। पर कुछ ऐसे अदृश्य योद्धा हैं जिनके बारे में शायद ही कोई जानता हो या खबर रखता हो। वे अदृश्य योद्धा आप जैसे समस्त ऐसे लोग हैं जो चिकित्सा व्यवस्था के सुचारु रूप से संचालन में परोक्ष रूप से सहयोग देते रहे हैं चाहे वे प्रशासनिक कार्मिक हों,लिपिकीय संवर्ग के हों या फिर बहु कार्य कार्मिक , कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा कोरोना से युद्ध में चिकित्सा संवर्ग के साथ खड़े रहने वाले योद्धाओं का योगदान भी अतुलनीय है। आज कार्यालय की गृह पत्रिका 'सेनानी' के इस अंक को इन समस्त वीर सेनानियों को समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। यदि मनुष्य मन से सबल है तो वह किसी भी विषम परिस्थिति से लड़कर विजयी होगा, फिर कोरोना क्या चीज है। पर मन को सबल रखने के लिए यह परम आवश्यक है कि हम अपने मन को नकारात्मकता से हटाकर सकारात्मक सोच की ओर लगाएँ और इसके लिए स्वस्थ साहित्य सबसे बड़ा योगदान करता है। आइए कार्यालय के वीर कोरोना योद्धाओं के कलम से रचित रचनाओं का आनंद लें।

आपकी प्रतिक्रिया प्रतीक्षित रहेगी।

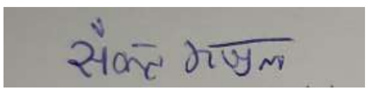

(सैकत मण्डल)
उप निदेशक(प्रभारी राजभाषा)

राजभाषा कार्यान्वयन की वार्षिक रिपोर्ट

1. शाखाओं एवं शाखा कार्यालयों में राजभाषा के सफल कार्यान्वयन हेतु एवं हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन पुरस्कार आदि से संबंधित परिपत्र जारी किया गया।

2. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें आयोजित की गईं जिनमें समीक्षा, कार्यान्वयन, प्रशिक्षण के लिए आवश्यक उपाए किए गए।

3. राजभाषा शाखा का नियंत्रण एवं नेमी कार्यों का निपटान कराया गया।

4. उप-क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की सभी शाखाओं एवं मुख्यालय से प्राप्त 587 पत्रों का अनुवाद व कंप्यूटर टाइपिंग के कार्य करवाए गए।

6. अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा शाखा का पुस्तकालय एवं वाचनालय का लाभ उठाया गया।

7. अनुवादकों द्वारा सभी शाखाओं में संपर्क कार्य किया गया एवं स्थल पर मार्ग दर्शन दिया गया।

8. इस कार्यालय द्वारा राजभाषा की 04 कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

9. विभिन्न शाखाओं / शाखा कार्यालयों से प्राप्त मासिक/तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की गई। सेवा-पंजियों में प्रविष्टियाँ हिंदी में भी की गई। सभी रबड़ की मोहरों को द्विभाषिक रूप से तैयार करवाया गया।

10. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अगस्त, 2019 एवं जनवरी, 2020 की दो छमाही बैठकों में इस कार्यालय ने भाग लिया।

11. जाँच-बिंदुओं एवं वार्षिक कार्यक्रम तथा अन्य मार्ग-दर्शन परिपत्र सभी के ध्यान में लाए गए।

12. सभी रिपोर्टों यथा हिंदी प्रगति की तिमाही रिपोर्ट, हिंदी शिक्षण योजना की अर्ध-वार्षिक रिपोर्ट, मासिक प्रगति रिपोर्ट, बीमा आयुक्त को अर्ध सरकारी पत्र आदि का प्रेषण मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता आदि को यथासमय किया गया।

13. राजभाषा गृहपत्रिका 'सेनानी' का अंक-10 प्रकाशित किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पत्रिका को प्रोत्साहन पुरस्कार का शील्ड प्रदान किया गया। संपादक अर्थात् श्रीमती जानकी सिंह, उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा) को विशेष शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

14. सभी शाखाओं एवं 18 शाखा कार्यालयों का राजभाषा से संबंधित निरीक्षण किया गया।

15. इस कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना के अधीन हिंदी प्रवीण/प्राज्ञ/पारंगत/टंकण/ कंप्यूटर टंकण का प्रशिक्षण दिलाया गया।

लघु कहानी

टीस

अपर्णा घोष
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वोट फॉर आफ़ताब! वोट फॉर आफ़ताब ! युनीवर्सिटी के कुछ पचास - साठ लड़के-लड़कियों के हाथ में बैनर था, कैम्पस में भी कई जगह पोस्टर लगा दिया गया था। अगले हफ्ते युनीवर्सिटी का आम चुनाव था। नौजवानों का झुंड नारेबाज़ी करते हुए कैंटीन की तरफ बढ़ा। कैंटीन के सामने मुखालिफ पार्टी का उम्मीदवार फोर्थ इयर का राजेश त्रिपाठी अपने दोस्तों के साथ खड़ा दिखा। उसके चेहरे पर ऐतमाद साफ नज़र आ रहा था, और क्यों न हो। युनीवर्सिटी के डीन का भतीजा जो ठहरा। पर आफ़ताब को भी आनेवाले चुनाव या उसके नतीज़े का कोई खौफ नहीं था। उसका मकसद तो युनीवर्सिटी में सालों से चल रहे गलत उसूलों के खिलाफ आवाज़ बुलंद करना था। सफेद कुर्ता और चुस्त चुरीदार पहने गोरा-चिट्टा, आफ़ताब राजेश को सलाम करते हुए आगे मैदान में बड़े तादाद में इक्ट्ठा हुए नौजवानों की तरफ बढ़ा। आज उसे तकरीर करना था। कब बीस मिनट हो गए पता ही नहीं चला बीच-बीच में तालियों की गूँज से चुनावी जोश का पता चल रहा था। आफ़ताब के जोशीले आवाज़ ने युनीवर्सिटी के खोखले नियमों जैसे इम्तिहान, फीस, युनीवर्सिटी में दाखिला जैसे मुद्दों की बेकैदगी को सबके सामने बेनकाब कर दिया था। रूमाल से माथे का पसीना पोछते हुए आफ़ताब मचान से उतरने लगा। दिमाग में कहीं घूम रहा था पसंदीदा शायर दुष्यंत कुमार जी के चंद अल्फाज़,

'सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए'

उसने दूर से ही बरगद के पेड़ के नीचे खड़े राजेश और उसकी टीम को देखकर हाथ हिलाया। आज बहुत दिनों के बाद दिल को सुकून मिला। अब तो घर लौटने की बेताब्री थी। किसी कत्थई आँखोंवाली की याद सताने लगी थी। कानों में अभी भी गूँज रही थी, 'आफ़ताब भाई, कल आपको युनीवर्सिटी हिला देना होगा"। अनजाने में ही होठों पर एक पतली सी मुस्कान फैल गई।

दोस्तों को विदा करते हुए वह रोहित के साथ साइकिल स्टैन्ड की तरफ बढ़ा।

'यार तूने तो आज सबके छक्के छुड़ा दिए। तूने देखा तेरे तकरीर के बाद तेरे कितने सपोर्टर्स बढ़ गए हैं। मैदान में मौज़ूद सब जैसे तेरे दीवाने बन गए हैं। लिख ले इस बार बाज़ी तू ही मार ले जाएगा"। रोहित का जोश अभी खत्म नहीं हुआ था।

'पता नहीं यार, मुझे आज क्या हुआ था। पर बहुत ज्यादतियाँ सही है हमने। अब आवाज़ उठाने का वक्त आ गया है। सबको इल्म है कि इस युनीवर्सिटी में कुछ सीट्स रूलिंग पार्टी कोटा के लिए रिजर्वड है जो कि नंबर के बिना पर नहीं बल्कि लाखों में बिकता है। हर सेमेस्टर के इम्तहान में सिटिंग अरेन्जमेन्ट में भी गड़बड़ किया जाता है, ताकि नकल करने में कुछ को फायदा मिल सके। मार्कस के मामले में भी ज़नीबदारी होती है। यह सब गलत है।" आफ़ताब ने अपनी साइकिल के पैडल पर पैर रखते हुए कहा।

'निकल रहा है? चल कैंटीन की तरफ चलते हैं, चाय की तलब लगी है।"

'नहीं कल मिलता हूँ। आज अम्मी ने जल्दी घर लौटने को कहा है।" रोहित से हाथ मिलाकर आफ़ताब ने साइकिल युनीवर्सिटी गेट की तरफ मोड़ दी। आँखों के आगे फिरोज़ा रंग का दुपट्टा लहराने लगा। गुल शब्बो की कली जैसी पतली, गोरी उंगलियों से जिसने उसके सीने पर टोककर कहा था,

'मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में ही सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।'

आफ़ताब जैसे साइकिल पर नहीं, चेतक पर सवार था। मोहल्ले में रहने वाली *परी,* अपनी बहन नीलम की दोस्त *परी* वक्त के साथ कब दोस्त से *खास* बन गई दोनों में से किसी को पता ही नहीं चला। बचपन में आफ़ताब, नीलम, मोहसीन, समा, बाला, श्यामा के साथ गिल्ली-डंडा, कंचे खेलनेवाली *परी* न जाने कब उसके लिए *ज़रुरत* बन गई थी। अब तो ऐसा लगने लगा था कि सबके साथ होते हुए भी,

'कुछ यूँ मिली नज़र उनसे कि....
बाक़ी सब नज़रअंदाज़ हो गए...'

होशियारगंज के लोग पहले किदवाईनगर के इस मोहल्ले में इकट्ठे रहनेवाले हिंदू- मुसलमानों की मिसाल दिया करते थे। कभी चबूतरे पर मिश्रा और मिर्ज़ा के बीच शतरंज की बिसात बिछ जाती थी, तो कभी खन्ना की बीवी खान के बावर्चीखाने में उनकी बीवी से गुफ्तगू करती नज़र आती थी। पर अब वक्त बदलने लगा है। होशियारगंज की गलियों और सड़कों पर कभी जय श्रीराम गूँजता तो कभी अल्लाह हो अकबर। सियासती जंग ने आपसी मोहब्बत के रंग को जैसे कुछ फीका कर दिया है। लेकिन जो भी हो, आफ़ताब और परी पर इन सबका कोई भी असर नहीं पड़ा। उनकी दोस्ती वक्त के साथ और गहरी होती गई। आजकल तो वक्त का पता ही नहीं चलता है जब दोनों के बीच शायरी और सियासत पर तकरार शुरू हो जाती है।

अपनी जान से मिलने की बेचैनी ने बीस मिनट के रास्ते को दस मिनट में तब्दील कर दिया। आफ़ताब को यकीन था कि परी उससे मिलने ज़रूर आएगी। अगले महीने उसकी सालगिरह है। ट्यूशन से मिलनेवाले पैसे से उसने परी के लिए मीर ताकी मीर की शायरी की किताब खरीदी है।

घर के दरवाज़े से मिश्रा चाची बाहिर निकल रही थीं।

'और बेटा बताओ क्या हाल है? आजकल घर का चक्कर नहीं लगाते"। चाची ने हँसते हुए आफ़ताब से पूछा।

'नमस्ते चाची जी। दरअसल इम्तहान सर पर है। वक्त निकालना मुश्किल हो गया है"।

'परी बता रही थी, चुनाव लड़ रहे हो। मेरी मानो त्रिपाठियों से मत उलझो। इलाके में काफी रौब है उनका"। आफ़ताब के चेहरे पर उलझन साफ़ नज़र आ रहा था। उसे इस वक्त चाची जी से बहस करना लाज़मी नहीं लगा। खाने की मेज़ पर रखी मिठाई के डिब्बे पर उसकी नज़र पड़ते ही उसे भूख का अहसास हुआ। नीलम रेकाब़ी पर मज़े-मज़े की मिठाइयाँ सजा रही थी। उसने उस में से एक गुलाब जामुन उठा लिया।

'अम्मी! मिठाई किस खुशी में?"

'अरे! मिठाई मिश्राइन लाई थीं। परी की बात पक्की हो गई। आज लड़केवाले आए थे, बात फाइनल करके गए हैं।"

'क्या! ऐसा कैसे हो सकता है?"

'तुझे क्यों साँप सूँघ गया? और लड़की सयानी हो गई है। लड़केवाले उन्हीं के जात के हैं। उसकी दादी परी की दादी की गुरु बहन हैं। लड़का सरकारी अफसर है। अच्छा खासा घर, ज़मीन......।" अम्मी बोले जा रही थीं, पर आफ़ताब को जैसे काटो तो खून नहीं।

आफ़ताब को लगा क्या यह वादा खिलाफी नहीं है। परी उसके साथ ऐसा कैसे कर सकती है। पर यह भी तो सच ही है कि उसने और परी ने अपने रिश्ते को दोस्ती के अलावा और कोई नाम भी तो नहीं दिया था। परी की बात पक्की हुई है। शादी तो नहीं हुई है ना। उसने सोचा था एकबार तालीम मुकम्मल हो जाए, नौकरी की तलाश के साथ ही परी को अपनी दिल की बात बताएगा। पर नहीं अब और देर करने से बात बिगड़ भी सकती है। वह आज ही परी से बात करेगा। आफ़ताब ने लंबी सांस छोड़ी-

'गर बाज़ी इश्क की बाज़ी है,
तो जो भी लगा दो डर कैसा,
जीत गए तो बात ही क्या,
हारे भी तो हार नहीं

फैज़ अहमद फैज़

दोनों छत की दीवार से सटकर खड़े दूर फिज़ा में डूबते हुए सूरज को देख रहे थे।

देख तेरे इनकार से "मैं" डूब रहा हूँ। आफ़ताब का मतलब जानती है ना तू?"

परी ने लंबी सांस लेते हुए कहा, 'हाँ आफ़ताब भाई जानती हूँ।"

'तो, खामोश क्यों है? चाचा जी, चाची जी को सब बता दे। तिवारियों को रिश्ते के लिए इनकार कर दे।" आफ़ताब की ज़ुबान से बेबसी टपक रही थी।

'यह मुमकीन नहीं है, आफ़ताब भाई! बाबु जी ने उन्हें ज़ुबान दी है। और फिर ....., " परी ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

आफ़ताब ने परी की आँखों में झांकते हुए पूछा, 'और फिर ..... क्या परी?" वह इस परी को नहीं जानता था।

'हमारा मज़हब अलग है। मेरे राज़ी होने से भी कुछ नहीं होगा। बाबु जी कभी नहीं मानेंगे।" मैं उन्हें नाराज़ तो नहीं कर सकती। परी की आँखें कुछ और ज़ुबान कुछ और कह रही थी। परी की आँखें मानो कह रही हो,

'लकीरें खींच रक्खी है चंद मतलबी
लोगों ने थाली में
वरना फ़र्क क्या है तेरी ईद और
मेरी दिवाली में'

'आज इक्कीसवीं सदी में तू मज़हब की बात करती है। लानत है ऐसी मोहब्बत पर। तू वक्त ले परी। हम दोनों तो प्रोग्रेसिव हैं! तू सोच, तेरे बिना मेरी ज़िन्दगी बेरंग हो जाएगी" आफ़ताब नें आखरी बार उसे समझाने की कोशिश करते हुए कहा।

'कुछ नहीं बदला है, आप कौम़ की उसूलों में तबदीली नहीं ला सकते हैं।"

'चलती हूँ, आफ़ताब भाई।" परी की नम आँखें उसके दर्द को बयाँ कर रही थी।

आफ़ताब कुछ देर और गमगीन होकर छत पर खड़ा रहा। उसका दिल उसकी मोहब्बत की गवाही दे रहा था-

'कहाँ तलाश करोगे तुम
मेरे जैसा इंसान,
जो तुमसे जुदा भी रहे और
बेइंतेहा मोहब्बत भी करे...'

गुलज़ार

इस दौरान होशियारगंज ने कई मौसमों का बदलता रूप देखा। मज़हबी दंगे कुछ कम हुए। आफ़ताब की तालीम मुकम्मल हुई। दर बदर की ठोकरें खाने के बाद वह ज़िन्दगी के ज़द्दो-ज़हाद में फंस गया। तबीयत नासाज़ होने की वजह से परी की शादी में न जा पाया था। परी उसकी पति के लिए खुश नसीब साबित हुई। शादी के फौरन बाद उसकी पति की तरक्की हुई और बंगलूर जैसे शहर में तबादला। पर उस दिन के बाद परी से आफ़ताब का फिर मिलना न हो पाया। बीच में जब परी अपने मायके आई थी, तो या तो बहुत ही कम दिनों के लिए या फिर आफ़ताब काम के सिलसिले में शहर से बाहर गया हुआ था। कहते हैं कि पहली मोहब्बत भुलाए नहीं भुलती। काम में मशरूफियत बढ़ती गई लेकिन शायरी का शौक बरकरार था। अम्मी और नीलम से परी की बरकत की खबर मिल जाती थी।

रात को खाने के मेज़ पर अम्मी ने बताया कि परी आजकल अपने मायके आई हुई है। अगले ही दिन सुबह वह उन सबसे मिलने आफ़ताब के घर पर आ गई। कई सालों बाद उसने परी को देखा, उसकी खुबसूरती में जैसे और निखार आ गया था। बहुत मुतमइन नज़र आ रही थी। परी ने अपने शौहर से कहा, 'इनसे मिलिए, शायर आफ़ताब *भाईजान*'।

'भई हम तो ठहरे हिसाब किताब वाले रूखे-सूखे आदमी, पर हाँ हमारी श्रीमती जी को शायरी, कविता, गज़ल से बड़ा प्रेम है।' तिवारी जी ने ठहाका लगाते हुए कहा। 'कुछ हमारी ही शान में सुना दीजिए साहब।'

आफ़ताब ने हँसकर जवाब दिया,

'पसंद है मुझे उन लोगों से हारना,
जो मेरे हारने की वजह से पहली बार
जीते हों।'

आफ़ताब के कानों में अभी भी तिवारी जी की क्या बात!, क्या बात! गूँज रही थी। आज बहुत सालों बाद वह परी को आबाद देख दिल से खुश हुआ, उसे माफ़ करते हुए सुकून महसूस किया। उसने अपनी डायरी निकाली, कुछ लिखने का दिल किया......

'कुछ इस तरह
मैंने ज़िन्दगी को आसान कर लिया।
किसी से माफ़ी मांग ली।
किसी को माफ़ कर दिया।'

\- *मिर्ज़ा गालिब*

****

कंप्यूटर के लिए सशक्त एंटीवायरस चयन की समस्या

(डॉ.बालेंदु शर्मा 'दाधीच', निदेशक, माइक्रोसॉफ्ट से सोशल मीडिया पर चर्चा के कुछ अंश के भी समाहित)

डॉ.बालेंदु शर्मा 'दाधीच'

बिनय कुमार शुक्ल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

बदलते समय के साथ कंप्यूटर हर कामकाजी और शिक्षण क्षेत्र के व्यक्ति के जीवन का एक अभूतपूर्व अंग बन गया है। कोरोना संक्रमण काल ने तो इस आवश्यकता को और सबल किया है। अब जब सब प्रभावित हैं तो मैं भी इससे कितनी दूरी बनाए रख सकता हूँ ।

कंप्यूटर से भेंट हालांकि सन 1998 में दार्जिलिंग प्रवास के दौरान हुई थी पर व्यक्तिगत प्रयोग के लिए सन 2012 के बाद से मैं इसपर निर्भर होना प्रारंभ किया । मेरे छोटे भाई वैसे तो चिकित्सा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं पर घर में कंप्यूटर आने के बाद उसकी खराबी को सुधारने की प्रक्रिया में वे सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर के काफी अभिज्ञ हो गए । उन दिनों बीएसएनएल के इंटरनेट का प्रयोग किया जाता था । धीरे-धीरे सॉफ्टवेयरों का प्रयोग बढ़ने लगा और साथ ही कंप्यूटर के लिए वायरस और एंटी वायरस का भी चलन होने लगा । कुछ एंटीवायरस मुफ़्त में मिलने लगे तो कुछ को दक्षिणा का भुगतान कर । अब आदमी का मन कहाँ मानता है ! मुफ़्त की चीजों का जो आनंद है वह भुगतान करके लेने में नहीं है । इसी मुफ़्त के सॉफ्टवेयर की तलाश प्रारंभ हुई और फिर नए लैपटॉप की खरीद के दौरान विंडोज ऑफिस 2007 की सीडी खरीदी गई । इसके साथ ही उसमें माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विंडो इसेंशियल एंटी वायरस भी दिया गया था । मेरे भाई ने इस संबंध में काफी जांच-पड़ताल करने के बाद मुझे सलाह दी की अलग से कोई एंटी वायरस लेने की जरूरत नहीं । विंडो का सिक्युरिटी इसेंशियल काफी है। भाई की सलाह पर हमने अपने कंप्यूटर में अलग से कोई एंटीवायरस का प्रयोग नहीं किया । अपने मित्रों को भी यही सलाह देता था कि विंडो के ही एंटीवायरस का प्रयोग करें । बाद में चलकर विंडो डिफेंडर आया हमने उसे भी अपडेट कर लिया । बाद में चलकर विंडो डिफेंडर आया इसे भी अपडेट कर लिया और काम चलता रहा । मेरे कंप्यूटर में कभी कोई खराबी नहीं आई । हालांकि कार्यालय के कंप्यूटर के लिए क्विक हील खरीदा गया था और हर वर्ष उसे अद्यतन करने के लिए काफी पैसा देना पड़ता था पर कभी यह सलाह देने की हिम्मत न कर सका कि विंडोज के लिए अन्य एंटीवायरस खरीदना बेकार है । इसका मुख्य कारण था कंप्यूटर की विशेषज्ञता न होना साथ ही सरकारी कार्यालयों में सलाह देने जैसी स्थिति में मैं था भी नहीं । मैं और मेरे भाई दोनों चिकित्सा विधा से और कभी कंप्यूटर की पढ़ाई नहीं की पर

हिट एंड ट्रायल का सिद्धांत मानकर कंप्यूटर के गुर सीखते रहे । जिससे भी मिला, जहाँ भी मिला निःसंकोच पूछा और सीखा ।

पिछले कुछ अरसे से मैं विभिन्न सोशल मीडिया में विद्वानों के मंचों का सदस्य हूँ । इन्हीं मंचों में से एक मंच का संचालन डॉ.बालेंदु शर्मा जी करते हैं । बालेंदु जी माइक्रोसॉफ्ट में निदेशक, स्थानीकरण के पद पर आसीन हैं । कंप्यूटर के विभिन्न प्रकार की तकनीकी समस्या का वे भरसक निदान बताते हैं साथ ही इस मंच पर उपस्थित विभिन्न विद्वान भी विभिन्न तकनीकी समस्याओं पर अपना मत देते रहते हैं । एंटीवायरस के बारे में चर्चा के दौरान एक बार बालेंदु जी ने भी बताया कि विंडोज़ 10 ऑपरेटिंग सिस्टम में किसी भी एन्टी वायरस लगाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि माइक्रोसॉफ्ट का डिफेंडर ही इसके लिए काफी है। पर किसी सज्जन ने बताया कि उनके एक परिचित के सरकारी विंडोज़ 10 ऑपरेटिंग सिस्टम कंप्यूटर में सेंध लगाकर रैनसमवेयर ने सभी फ़ाइल को हैक कर लिया और 72 घंटे में 35 हज़ार अदा करने पर ही उसे डिक्रिप्ट करने का आश्वासन दिया। हालांकि उनके कंप्यूटर में क्विक हिल टोटल एन्टी वायरस भी था। बाद में क्विक हिल को संपर्क करने पर उन्होंने अपने रिकवरी एक्सपर्ट की मदद से लगभग 90 प्रतिशत फाइल्स को रिकवरी कर दिया।

इस विषय में बालेंदु जी ने कहा कि, ‘धन्यवाद यह जानकारी साझा करने के लिए। मैं अपनी बात पर आज भी कायम हूँ कि विंडोज़ 10 यदि जेनुइन है और नियमित रूप से अपडेट किया जा रहा है तो उसमें एंटी-वायरस की ज़रूरत नहीं है। हालाँकि इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि यूज़र अपने स्तर पर बुनियादी गलतियाँ करता चला जाए। कृपया निम्न बातों पर विचार करें- मिसाल के तौर पर कोई गलत फाइल आने पर विंडोज़ सूचना देता है कि इसे इस्तेमाल न करें। फिर भी यूज़र अगर उसे इस्तेमाल करता है तो विंडोज़ क्या करेगा। इसी तरह, किसी गलत वेबसाइट पर जाने पर एंटी वायरस सूचित करता है कि यह वेबसाइट असुरक्षित हो सकती है। फिर भी यदि यूज़र न माने तो विंडोज़ क्या करेगा।

बहुत से यूज़र अपने ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट नहीं करते। इस अपडेट में एंटी-वायरस से संबंधित नई क्षमताएँ भी मौजूद होती हैं। इस बीच बने वायरसों, स्पाइवेयरों तथा रैंसमवेयरों से मुकाबला करने के लिए आपके विंडोज का अपडेट होना ज़रूरी है। अगर अपडेट नहीं करेंगे तो इसके लिए क्या विंडोज़ को दोषी माना जाएगा।

अब ज़रा दुनिया के शीर्ष एंटी-वायरसों के परीक्षणों पर एक नज़र डालिए जो कुछ ही समय पहले एवी-कम्पेरेटिव्ज की तरफ से किया गया। इसमें क्विक हील का कहीं अता-पता ही नहीं है। लेकिन विंडोज़ डिफेन्डर टॉप एंटी-वायरस के साथ मुकाबला करते हुए दिखाई देगा। उसमें 99.8 प्रतिशत सुरक्षा सिद्ध हुई है। एक दो एंटी-वायरस हैं जिनमें 100 प्रतिशत सुरक्षा भी सिद्ध हुई है लेकिन विंडोज़ बाकी सबसे आगे है।

जब आप कोई अन्य एंटी-वायरस इस्तेमाल करते हैं, जैसे क्विक हील, तो 99% मामलों में विंडोज़ डिफेन्डर निष्क्रिय करने के बाद ही एंटी-वायरस इन्स्टॉल होता है। ऐसे में यदि वायरस आता है तो कौन जिम्मेदार माना जाएगा, क्विक हील या विंडोज़?

अब अंतिम बात। आपको पता है कि अमेरिका के रक्षा मंत्रालय पेन्टागन ने हाल ही में गूगल, अमेजॉन और दूसरी सभी बड़ी कंपनियों की बिड्स को अनदेखा करते हुए माइक्रोसॉफ्ट को 10 अरब डालर का कॉन्ट्रैक्ट दिया है जिसके तहत माइक्रोसॉफ्ट दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा तंत्र के डेटा की जिम्मेदारी संभालने जा रहा है। क्या आपको लगता है कि अगर माइक्रोसॉफ्ट का तंत्र असुरक्षित होता तो पेन्टागन यह जिम्मा उसे सौंपता?और विंडोज़ डिफेन्डर खरीदना नहीं पड़ता, वह आपके पास पहले से मौजूद है इसलिए ऐसा भी नहीं है कि कोई कंपनी आपको कुछ खरीदने के लिए बाध्य कर रही है। शेष यूज़र की मर्जी!

मेरे लेख तथ्यों पर आधारित होते हैं। मेरा अपना अनुभव भी मैंने साझा किया है कि सन 2015 के बाद से मैंने कोई एंटी-वायरस इस्तेमाल नहीं किया। किंतु अंततः यूज़र का अपना विवेक और सावधानी सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। मेरे पास दुनिया की सबसे ज्यादा आधुनिक तथा सुरक्षित कार हो सकती है लेकिन फिर भी मैं दुर्घटना करने में सक्षम हूँ, क्योंकि मैं एक इंसान हूँ।

डॉ. बालेंदु शर्मा जी के इस विचार एवं सुझाव के बाद मैं अब पूर्णतः आश्वस्त हो गया हूँ कि सन 2012 से अबतक माइक्रोसॉफ्ट के एंटीवायरस पर मैं जो भरोसा करता आया हूँ वह गलत नहीं था । अमूमन याद देखा गया है कि सरकारी कार्यालयों के कंप्यूटर अधिकांशतः या तो इंट्रानेट से जुड़े होते हैं या फिर बिना किसी नेटवर्क के । ऐसे कंप्यूटर में भी वायरस का खतरा बना रहता है। इन कंप्यूटरों के सॉफ्टवेयर या अन्य पैच समय-समय पर अद्यतन नहीं करवाए गए तो हो सकता है कि कभी किसी कारण से इनमें वायरस का अतिक्रमण हो जाए और फिर आवश्यक जानकारियाँ विलुप्त हो जाएँ । इसके लिए केवल एंटीवायरस ही नहीं कंप्यूटर को भी अपडेट करते रहना परम आवश्यक है । और फिर यदि आप भी माइक्रोसॉफ्ट का ऑपरेटिंग सिस्टम प्रयोग कर रहे हैं तो आपको अलग से कोई एंटीवायरस लेने की आवश्यकता नहीं है। बस आवश्यकता है कि आप अपने कंप्यूटर को समय-समय पर अद्यतन करते रहे और किसी भी बाहरी कड़ी को बिना जाँचे-परखे क्लिक कर अनावश्यक खतरा मोल लेने से बचें ।

भारत की शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता

आशुतोष मिश्र,
प्रवर श्रेणी लिपिक

लोकतांत्रिक भारत के तमाम सुन्दर रंगो में एक अद्बभुत रंग यहां की शानदार शिक्षा व्यवस्था का भी है। यह विश्व की वह अद्बभुत व्यवस्था है जहाँ निन्यानवे प्रतिशत विद्यार्थी जीवन भर नहीं समझ पाते कि उन्होंने जो पढ़ा है उसका लाभ क्या है। अधिकांश विद्यार्थियों को तो यह भी पता नहीं होता कि वे पढ़ क्यों रहे हैं। वे दो घण्टे मेहनत कर के त्रिकोणमिति के सूत्र केवल इसलिए रटते हैं कि 'याद नहीं किया तो मिसीर जी माटसाब मार मार के भुर्ता बना देंगे।' हालांकि स्वयं मिसीर जी माटसाब भी कभी समझ नहीं पाते कि हर बच्चे को इस मुई त्रिकोणमिति की जरूरत क्या है।

सरकार और देश की बुद्धिजीविता कहती है कि हर बच्चे को स्कूल-कॉलेज में पढ़ना ही चाहिए, पर कोई यह नहीं बता पाता कि पढ़ने वाले को इससे मिलेगा क्या? केवल बेरोजगारी ही न? भारत की एक अद्भुत सच्चाई है कि यहाँ बेराजगार केवल पढ़े लिखे लोग ही होते हैं, कोई अनपढ़ व्यक्ति कहीं बेरोजगार नहीं मिलेगा। फिर बच्चों को जबरदस्ती स्कूलों में ठेल कर बेरोजगारों की फौज खड़ी करने से लाभ क्या है?

जिस बच्चे को बड़े हो कर टीवी रिपेयर करना है, उसे पुरापाषाण काल का इतिहास क्यों पढ़ाना? जिसे टाटा के स्टील प्लांट में वेल्डर का काम करना है उसे जबरदस्ती हिंद महासागर की समुद्री धाराओं के बारे में क्यों पढ़ाया जाता है? इन प्रश्नों का उत्तर किसी के पास नहीं।

जानते हैं, भारत की आर्थिक दुर्दशा में सबसे बड़ा योगदान उसकी लक्ष्यविहीन शिक्षा व्यवस्था का है। इस व्यवस्था में पढ़ाई पूरी करना क्या है। रोजगार के बारे में निर्णय तो पढ़ाई पूरी होने के बाद परिस्थितियों का आधार पर लिया जाता है। कलक्टर बनने की तैयारी करने वाला लेखक हो जाता है, बैंकर बनने की पढ़ाई करने वाला मास्टर हो जाता है और बीएड वाले को अंत में पान की गुमटी खोलनी पड़ती है। क्या मतलब है ऐसी व्यवस्था का?

कितनी अजीब है कि पढ़ाई के नाम पर तीन साल के बच्चे से उसका बचपन छीन लिया जाता है। वह छह घण्टे स्कूल में रहता है, दो घण्टे ट्यूशन में, दो घण्टे डांस क्लास में और दो घण्टे रास्ते में..... और यह सब केवल इसलिए ताकि मां-बाप तीन वर्ष के बच्चे से पड़ोसियों के सामने 'टिंकल टिंकल लिटील स्टार" गवाकर मुस्कुरा सकें... क्या यह सब बाल मजदूरी जैसी नहीं लगती?

एक दस वर्ष का बच्चा यदि अपने पिता के साथ खेत में काम करे तो वह बाल मजदूरी है। किसी बच्चे का भैंस चराना दंडनीय अपराध है। पर टीवी वाले एक सात साल की लड़की को क्रूरता के साथ कठिन स्टंट कराते हुए नंगा नचायें, तो वह अपराध नहीं है। वह मजदूरी भी नहीं है। क्या है इस मूर्खतापूर्ण नीतियों का अर्थ? क्या लाभ है ऐसी शिक्षा व्यवस्था का?

शिक्षा नीति को लेकर भारत दूसरों से नहीं तो कम से कम चीन से तो सीख ही सकता था। चीन की शिक्षा प्रणाली पूर्णतः रोजगार आधारित है, और यही उसकी सफलता का सबसे बड़ा राज भी है।

तो रूकिये। सत्तर वर्षों में पहली बार इस दिशा में एक कदम बढ़ा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रोजगार परक शिक्षा की ओर बढ़ता हुआ पहला कदम है। हम यह नहीं कह रहे कि नई शिक्षा नीति रोजगार की पूरी गारंटी दे देगी, पर इतना अवश्य है कि बच्चों पर से अनावश्यक बोझ कम तो जरूर हो जाएगा।

मेरे हिसाब से नई शिक्षा नीति में दो बातें महत्वपूर्ण हैं। पहला यह कि नौंवी कक्षा से ही बच्चे साइंस, आर्ट्स, कॉमर्स के बन्धन से मुक्त हो कर स्वेच्छा से विषय चुन सकते हैं। वे चाहें तो केवल वही विषय पढ़ सकते हैं जो वे पढ़ना चाहते हैं। और दूसरा यह कि पहले की तरह अब संगीत, नृत्य, खेल आदि अतिरिक्त विषय नहीं होंगे बल्कि मुख्य धारा में होंगे।

तो यह उम्मीद की जा सकती है शायद भविष्य में कुछ और सुधारों के बाद स्थितियां सचमुच बदल जाए और बच्चे अब 'याद नहीं किया ते मिसीर जी माटसाब मार-मार के भुर्ता बना देंगे।" वाले भय से मुक्त होकर अपनी रुचि के अनुसार विषय का चयन करेंगे और अपना जीवन सफल करेंगे।

सरकारी कार्यालयों में वर्क फ्रॉम होम - लाभ एवं नुकसान

शुभंकर मंडल
प्रवर श्रेणी लिपिक

'वर्क फ्रॉम होम' यानि घर से काम, अक्सर यह बात हमें सुनने में आता है। आश्चर्यचकित न होइए, यह प्रणाली और कछ नहीं बल्कि कार्यालय के कामों को घर बैठे ही करने की है। इस प्रणाली के व्यवहार की परंपरा केवल कुछ मल्टीनेशनल कंपनियों में किए जाने के बारे में हम अब तक सुनते आए हैं। पर आज के दौर में अधिकतर सरकारी एवं और गैर-सरकारी संस्थानों में भी इस प्रणाली को व्यवहार में लाया जा रहा है। इसका मुख्य कारण हम सभी जानते हैं, जी हाँ कोविड - 19 वायरस। जिसके संक्रमण की चपेट में आज भारत समेत दुनिया के अधिकांश देश हैं। सभी शैक्षिक, आर्थिक, धार्मिक और व्यावसायिक संस्थानों में कड़ी पाबन्दियाँ है।

देश-दुनिया में इस समय एक भय का माहौल है। सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थानों में कार्यरत लोगों को घर पर ही रहने, बाहरी लोगों से दूरी बनाए रखने और वर्क फ्रॉम होम' यानी घर से काम करने के लिए कहा गया है। केंद्र एवं प्रदेश की सरकारों ने स्वास्थ्य, सुरक्षा और रोजमर्रा की चीजों से जुड़े लोगों को अपनी सेवा लगातार देने तथा स्वयं को सुरक्षित रखने के दिशा-निर्देश भी जारी कर दिए हैं। पर इस तरह ज्यादा दिनों तक एक देश को चला पाना असंभव है। इसलिए इन पाबंदियों के समय सरकार अपने सभी कार्यालयों में वर्क फ्रॉम होम' प्रणाली को बढ़ावा दे रही है, ताकि देश सुचारू रुप से चल सके।

वर्क फ्रॉम होम से प्रदूषण से मुक्ति : इससे यह तथ्य भी उभरकर सामने आया है कि नि:संदेह इस लॉकडाउन और शारीरिक दूरी से परिवार की थमी जिंदगी को दोबारा शुरू करने का मौका मिला है। वर्तमान लॉकडाउन के अन्य कई सकारात्मक असर हमारे सामने दिखाई दे रहे है। मसलन अधिकांश लोगों के अपने-अपने घरों में ही रहने के कारण सड़कों पर यातायात का कम होना, वाहनों का न्यूनतम प्रयोग तथा सड़क जाम से निजात इत्यादि के साथ ही अनेक प्रकार के प्रदूषणों से मुक्ति भी इसके सकारात्मक परिणाम कहे जा सकते हैं।

रात में जाम से छुटकारा : फ्लेक्सजॉब नामक संस्था ने वर्क फ्रॉम होम से संबंधित एक हजार लोगों पर अध्ययन करने पर पाया कि घर से काम करने वाले लोग अपने काम में 65 फीसदी अधिक उत्पादन कर रहे है। इस रिपोर्ट में यह बताया गया है कि कार्यालय का काम करते-करते उनके कार्यालय के काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच से तमाम तरह के खांचे बन गए थे जिनसे

भी कुछ हद तक उन्हें छुटकारा मिला है। घर से कार्यालय जाने का तनाव, रास्तों में जाम एवं कार्यालय पहुंचने में लेटलतीफी जैसे झंझटों से छुटकारा भी इससे मिला है।

देखने में आया है कि पहले वर्क फ्रॉम होम की परंपरा केवल कुछ मल्टीनेशनल कंपनियों तक ही सीमित थी। उसके बाद यह संस्कृति उन कार्यालयों तक विस्तारित हुई जिन कार्यालयों में फाइलों की ऑनलाइन व्यवस्था कर दी गई थी। भारत सरकार के साथ राज्य सरकारों के आधे कार्यालयों में अभी पूरी तरह फाइलों का डिजिटलीकरण नहीं होने से सभी कार्मिकों को अभी वर्क फ्रॉम होम की सुविधा नहीं है। यही वजह है कि देश में लॉक डाउन के बाद वर्क फ्रॉम होम से देश की कार्यालयी व्यवस्था को अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है।

सभी कार्यालयों को ऑनलाइन करने की ज़रूरत : हां, इतना जरूर है कि यह कार्य संस्कृति देश के कार्यालयी तंत्र को ऐसी विषम परिस्थितियों में संचालन करने के लिए सरकारों के लिए एक मॉडल जरूर है। लेकिन इसके लिए सरकारों को पहले अपने सभी कार्यालयों को बिना देर किए ऑनलाइन करने की जरूरत होगी। इसके साथ-साथ इससे जुड़े अपने सभी कार्मिकों को भी इस तंत्र के संचालन के लिए प्रशिक्षित करते हुए डिजिटल यंत्रों से लैस करना होगा।

अनेक प्रकार के तनावों से छुटकारा मिलेगा : तमाम वैज्ञानिक शोधों के अनुसार आज मानवता का भविष्य भी दांव पर लगा है। इसलिए भविष्य में भी संक्रमण की ऐसी समस्याओं को नकारा नहीं जा सकता है। इसलिए सरकारों को वर्क फ्रॉम होम जैसे मॉडल को और अधिक विकसित करते हुए सभी लोगों तक इसकी पहुंच बनानी होगी। इससे ऐसी संकट आने पर मानवता का बचाव भी होगा और कार्मिकों के रास्तों की तमाम मुश्किलें भी कम होगी। साथ ही उन्हें अनेक प्रकार के तनावों से छुटकारा मिलेगा और देश की कार्यालयी व्यवस्था भी निर्बाध गति से चलती रहेगी।

प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध

कोरोना बचाव एवं चिकित्सा में क.रा.बी. निगम का योगदान

विकास कुमार साव
सहायक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अपने नाम के साथ-साथ अपने प्रतीक(पंचदीप) की महत्ता को भी सार्थक करता है। जिस प्रकार धरा पर पंचतत्व ऊर्जा देकर हमारे जीवन का संचालन करता है, ठीक उसी प्रकार हमारे निगम का पंचदीप जो प्रकाश का प्रतीक है, वह कर्मचारी राज्य बीमा निगम को बीमाकृत व्यक्तियों एवं उनके अश्रितों के जीवन में अंधकार की जगह प्रकाश करते हुए चिंता से मुक्त करती है। उनको सामाजिक, आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें पूर्ण चिकित्सा एवं नकद हितलाभ की भी सुविधा मुहैया करवाती है। वर्ष 1948 से प्रारंभ सेवा को निगम द्वारा इस सर्वव्यापी महामारी में भी पूर्ण कर्तव्य तथा निष्ठा से निभाता आ रहा है, जो पूरे विश्व के समक्ष एक मिशाल कायम करता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि कोविड-19 महामारी में कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 के तहत राहत के उपाय किया गया है जो इस प्रकार हैः-

1. क.रा.बी. निगम के तहत बिमारी की परिभाषा विशेष रूप से कोविड - 19 को परिभाषित नहीं करती है, लेकिन इस महामारी में कोविड - 19 के उपचार हेतु क.रा.बी. अधिनियम के तहत कोविड-19 के चिकित्सा का प्रावधान किया गया।

2. क.रा.बी. निगम ने 1042 बिस्तर वाले 13 निजी अस्पतालों को कोविड-19 अस्पताल के रूप में घोषित किया है।

3. देश के अधिकांश शेष अस्पतालों में 1861 अलगाव बेड उपलब्ध कराए गए हैं। इन अस्पतालों में 197 वेंटिलेटर के साथ 555 आई.सी.यू./ एच.डी.यू. बेड उपलब्ध कराए गए हैं।

4. संगरोध सुविधा के लिए चार जिसमें अलवर(राजस्थान), बिहरा (बिहार), गुलबर्गा(कर्नाटक) और कोरबा (छत्तीसगढ़) में क.रा.बी. निगम अस्पतालों में 1148 बेड आवंटित किया गया है।

5. सर्वव्यापी महामारी में लाभार्थी एवं संबंधित बिना रेफरल के समर्पित कोविड-19 अस्पताल तथा क.रा.बी. निगम द्वारा टाई-अप अस्पतालों में जिसमें इमरजेंसी और गैर-इमरजेंसी भी शामिल है, वह अपनी चिकित्सा करवा सकते हैं, जो प्रशंसनीय है।

6. सर्वव्यापी महामारी में क.रा.बी. निगम के निर्देशानुसार टाई-अप अस्पतालों में सभी विशिष्ट उपचार/ प्रक्रिया मुहैया कराई जा रही है जो प्रारंभ में नहीं थी, जो जनहित को दर्शाता है।

7. क.रा.बी. निगम अस्पतालों में चिकित्सा सेवाएं जो बंद कर दी गई थी, इस सर्वव्यापी महामारी के मद्देनजर 15 मई, 2020, भारत सरकार के निर्देशानुसार सामाजिक सुरक्षा मापदंड और सुरक्षा सावधानी रखते हुए फिर चिकित्सा सेवा प्रारंभ कर दी गई है, जो इस विषम परिस्थिति में मानवीयता का परिचायक है।

8. इस कठिन समय में क.रा.बी. निगम के लाभार्थियों की कठिनाई को कम करने के लिए लॉकडाउन अवधि के दौरान निजी दवाखानों से लाभार्थियों द्वारा दवाओं की खरीद और इसके बाद प्रतिपूर्ति की अनुमति दी है, जो सराहनीय है।

9. स्थायी अपंगता के कारण बीमाकृत रोजगार में रहने वाले और सेवानिवृत्त बीमित व्यक्तियों को नियम 60-61 के तहत लॉकडाउन के कारण अग्रिम वार्षिक एकमुश्त अंशदान जमा कराने में असमर्थ लाभार्थियों को 30 जून, 2020 तक चिकित्सा लाभ प्राप्त करने की अनुमति दी गई है।

10. 14 मई, 2020, माननीय केंद्रीय वित्त मंत्री की प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिए आदेशानुसार जोखिम उद्योगों में उपस्थित 10 से कम कर्मचारियों को केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचना के माध्यम से क.रा.बी. निगम में कवरेज अनिवार्य कर दिया गया है।

11. देश में कोरोना वायरस (कोविड-19) के रूप में सर्वव्यी महामारी को ध्यान में रखते हुए, महानिदेशक ने कर्मचारी राज्य बीमा (सामान्य) विनियम, 1950 के विनियमन 26 और 31 में दर्ज प्रावधानों को शिथिल करते हुए फरवरी 2020 और मार्च 2020 के महीने के लिए क.रा.बी. अंशदान क्रमशः 15 मार्च, 2020 और 15 अप्रैल, 2020 के बजाय 15 अप्रैल, 2020 और 15 मई, 2020 तक दायर और भुगतान की छूट दी गई है। इस विषम परिस्थिति में बहुत ही सराहनीय है।

इस सर्वव्यापी महामारी में जहाँ न कोई राजा है न कोई रंक वाली कहानी की पुनरावृत्ति है अर्थात जहाँ हर तबके के व्यक्ति चाहे वह अमीर हो या गरीब सभी अपने स्तर पर आर्थित तंगी से गुज़र रहे हैं। जहाँ पर खुद के जीवन का कोई मोल न रह गया हो ऐसी विषम परिस्थितियों में क.रा.बी. निगम ही है जो उससे (निगम) जुड़े लोगों को कोरोना से बचाव में नए संशोधन करते हुए मानव कल्याण और इस महामारी से बचाव को अग्रिमता देते हुए विश्व के समक्ष प्रशंसा के पात्र बने हैं एवं महात्मा गाँधी जी की यह पंक्ति जो सर्वव्यापी महामारी के समय चिकित्सा द्वारा कोरोना वायरस से बचाव में निगम को योगदान पर बिल्कुल सटीक प्रतीत होता है-

‘कर्तव्य का पालन करो जो तुम्हारे निकटतम हो।’

पर्यटन विशेष

सागर की गोद में कुछ पल

श्रीतमा चक्रवर्ती
प्रवर श्रेणी लिपिक

पिछले वर्ष पतझड़ के दौरान कहीं घूमने का मन किया । फटाफट तैयारी हुई, कार्यालय से आवश्यक अनुमोदन के पश्चात हम पति-पत्नी बाली की यात्रा पर निकल पड़े । बाली दक्षिण एशिया का एक मनोरम द्वीपसमूह है । इस द्वीपसमूह के विभिन्न दर्शनीय स्थलों की यात्रा तो आम बात है पर मेरे लिए जो सबसे रोमांचक यात्रा या यूं कहें स्थान रहा है वह है नुसा दुआ समुद्र तट । यहाँ आने के बाद ऐसा लगा जैसे सारे पैसे वसूल हो गए । यहाँ पानी में आनंद लिए जाने वाले विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाता है जिनमें पैरा सेलिंग, स्नॉरक्लिंग, बनाना बोट, फ्लाइंग फिश, वाटर स्कूटर और न जाने कितनी चीजें हैं कि बस देखते ही रह जाएंगे । पर इन सबमें सबसे आकर्षक है बाली-ओशन-वाकर टूर ।

ओशन-वाकर में समुद्र के अंदर जाकर पानी के अंदर के दृश्य का आनंद लिया जाता है । पानी के अंदर जाने वाली अधिकांश गतिविधियों में स्क्यूबा डाइविंग के उपकरणों का प्रयोग होता है पर इस अभियान में ऑक्सीजन से भरे हेलमेट का प्रयोग किया जाता है । पर्यटक को समुद्र में काफी दूर तक ले जाया जाता है और फिर उसे सीढ़ियों के सहारे पानी के नीचे उतार दिया जाता है । लगभग 40 फुट की गहराई तक नीचे जाया जा सकता है । समुद्रतल की गहराई में पहुँच कर व्यक्ति अपने पैरों पर समुद्र के भीतर की जमीन पर चल सकता है । इसके लिए आवश्यक नहीं है कि आपको तैराकी आती ही हो । हर व्यक्ति इसका आनंद ले सकता है ।

जैसे ही आप सागर की गहराई में उतरते हैं, ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग में आ गए हों। सचमुच स्वर्णिम आनंद आता है । आपके चारों ओर केवल नीला पानी और बीच में आप सशरीर उसमें भ्रमण कर रहे होते हैं । न शोर-शराबा,न ही भीड़, एकदम नीरव वातावरण, ऐसी शांति कि मैं अपने दिल की धड़कनों को सुन पा रही थी, बस पानी के दाब के कारण मेरे कान बंद से हो रहे थे।

पर जल्द ही इस क्षणिक असुविधा से मैं बाहर थी और जल-तल की गहराई में छुपी अद्वितीय और

अप्रतीम सुंदरता का आनंद लेने लगी। चूंकि सागरतल का जल एकदम सफेद था ऊपर से आ रही सूरज की रोशनी जल में घुलकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों चाँद की रोशनी में नहाए हुए चाँदनी छटा बिखेर रही थी और जल चांदी का हो गया हो । इसमें तैरते कीट और मछलियों को देखकर तो मन और भी प्रफुल्लित हो उठा । यह ऐसा अप्रतीम आनंद का क्षण था जिसे शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव नहीं है । तलहटी में रंगीन मछलियों का बार-बार आपके आसपास से गुजरना,कोमल स्पर्श करना, सफ़ेद बालू के छोटे-छोटे टिले और विभिन्न प्रजातियों के जीव-जन्तु। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों ये सब मेरी ही प्रतीक्षा कर रहे थे और मेरे आगमन पर प्रफुल्लित होकर मेरा स्वागत कर रहे हों। क्षण भर में ही आपको सिर से लेकर पैर तक मछलियाँ ढक सी लेती हैं। ऐसा लगता है जैसे अपनी भाषा में आपसे स्वागत में गीत गाते हुई बात करने का प्रयास कर रही हों। मैंने हाथ बढ़ाकर एक-आध मछली को स्पर्श भी किया । जल में तैरती हुई मछली को कोमलता से स्पर्श करना और फिर उसे अपने आसपास तैरते हुए देखने का अलग ही आनंद आ रहा था । सतह पर कोमल बालू का स्पर्श ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे आपके पैरों की सेवा के लिए ये कण प्रस्तुत हो रहे हों। कुल मिलाकर धरती के नीचे के इस स्वर्ग की अनुभूति अप्रतीम है ।

प्रकृति के इस अप्रतीम सुंदरता को निहारते हुए समय कब और कैसे बीत जाता है इसका अनुमान ही नहीं लगता । कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि फिर से बचपन के वो सारे ख्वाब सत्य हो रहे हों जिसमें विभिन्न जलीय जंतुओं से मित्रवत व्यवहार और अटखेलियाँ की जा रही हों। जीवन का यह पल दुर्लभ ही है । पलक झपकते एक घंटा कैसे बीत गया पता ही नहीं चला । ऐसा लगा जैसे अभी तो शुरुआत हुई थी और इतनी जल्द....

ऐसा लग रहा था जैसे मुझे मेरे सबसे प्रिय स्थान से भरे दिल से वापस जाना पड़ रहा हो । बुझे हुए मन से मन में इसकी सुंदरता और इसके साथ बिताए पल का चित्र संजोए फिर से मानवी दुनिया में वापस आ तो गई पर वो पल, वो स्वर्णिम पल मुझे हमेशा ही ताज़गी देते रहेंगे और खुश करते रहेंगे।

संस्कृति -हिल्सा मछली

विप्रजीत विश्वास
पुत्र बिजन कुमार विश्वास, सहायक

पहले-पहल लोग हिल्सा का इस्तेमाल कैसे करते थे उसका विवरण इस प्रकार है

- सर्वप्रथम 10वी शताब्दी ईसा पूर्व हिल्सा के लाभप्रद गुणों के वर्णन का उल्लेख मिलता है।
- आयुर्वेद शास्त्र में सिंध में सुफी संत झुलेलाल द्वारा 950 ई. में हिल्सा मछली पर सवारी करने का उल्लेख मिलता है।

- हिल्सा मछली का सेवन करने से मो. बिन तुगलक की जान चली गई। कहा जाता है कि जब मो. बिन तुगलक ने पहली बार हिल्सा मछली का सेवन किया तो उन्हें उनका स्वाद बहुत ही अच्छा लगा और उसी दिन से प्रतिदिन हिल्सा मछली खाने लगा। उन्होंने लगातार 3-4 वर्षों तक हिल्सा मछली का सेवन किया। उस दौरान लोगों को यह पता नहीं था कि हिल्सा कहाँ से ऑक्सीजन ग्रहण करता है और कहाँ से कार्बनडाइऑक्साइड छोड़ता है। मछली के उस अंश को खाना हानिकारक होता है। इसी वजह से ही 1351 ई. में मो. बिन तुगलक की मृत्यु हो गई।
- 1484 ई. में मानस मंगल काव्य में हिल्सा को पकाने की विविध विधियों का वर्णन किया गया।
- पुर्तगाली मिशनरी एवं समुद्री यात्री फ्रे सेबस्तियन मैनरिक ने सिंध में हिल्सा पकड़ने की तकनीक के बारे में लिखा है।
- 1822 ई. में फ्रांसिस हैमिलटन ने पहली बार क्लूपनडन हिल्सा का वर्गीकृत स्थिति प्रस्तुत किया।
- हिल्सा का मूल्यः 2 पीस के लिए 1 रूपये, रामलाल बंधोपाध्यय ने अपने नाटक "कस्ती पथर 1897 ई. में इसका उल्लेख किया है।
- सन् 1970 में मुजिबुर रहमान ने अपने चुनाव अभियान में हिल्सा को थीम बनाया था।
- बंग्लादेश ने 1973 में हिल्सा का इस्तेमाल करते हुए डाक स्टांप एवं सिक्के जारी किया।
- इंदु घाटी सभ्यता की कलाकृतियों में पाई गई प्रतीकों में मछली का चिह्न 10 प्रतिशत पाया गया।
- हिल्सा मछली कहाँ पाई जाती हैः-
- हिल्सा मछली अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी में पाई जाती है।

साहित्य चर्चा

बांग्ला साहित्य के धरोहर -श्री रमेंद्र सुंदर त्रिवेदी

सौमिक मिश्र
प्रवर श्रेणी लिपिक

आज मैं एक ऐसे विभूति से आपका परिचय करवाने जा रहा हूँ जिन्होंने बांग्ला साहित्य को एक अलग ही दिशा दी । मेरे लिए यह बड़े गर्व की बात है कि मैं ऐसे स्थान पर रहता हूँ जहाँ बांग्ला साहित्य के धरोहर एवं एक प्रमुख स्तम्भ श्री रमेंद्र सुंदर त्रिवेदी जी का जन्म हुआ है । उनका जन्म 20 अगस्त सन 1864 को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद के कांडी अनुमण्डल में हुआ था । उनके पिताजी का नाम श्री गोविंद सुंदर एवं माताजी का नाम चंद्रकामिनी था ।

रमेंद्र बचपन से ही होनहार विद्यार्थी थे। फिजिक्स और केमेस्ट्री से बीएससी की डिग्री में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद उन्हें सन 1888 में प्रेमचंद रॉयचंद छात्रवृत्ति भी प्राप्त हुई थी । विज्ञान के अतिरिक्त वे विविध विषयों के ज्ञाता थे। बंगीय साहित्य परिषद की स्थापना का विचार देने वाले महापुरुषों में उनकी गिनती होती है । अनुवाद के क्षेत्र में भी उनको वरदहस्त प्राप्त था । अत्रेय ब्राह्मण को बांग्ला भाषा में अनुवाद कर उन्होंने अपनी इस विशिष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन किया है । वैज्ञानिक शब्दावली का बांग्ला भाषा में रूपांतर कर उन्होंने साहित्यजगत में अपनी विद्वता का लोहा मनवाया । इसके अतिरिक्त बांग्ला भाषा में विज्ञान लेखन की उन्होंने जो परिपाटी प्रारंभ की वह भी अद्वितीय है । प्रारंभ में कलकत्ता के रिपन कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में जुड़े, कालांतर में वे इसके प्रधानाचार्य बने । अपने कार्यकाल में उन्होंने रिपन कॉलेज को विकास के उत्कृष्ट शिखर तक ले गए । पश्चिम बंगाल में उन्हें बांग्ला भाषा में विज्ञान लेखन का आधार स्तम्भ माना जाता है । उनके लिखने की शैली इतनी सरल होती थी मानों खेल-खेल में ही विज्ञान की बातें सहज रूप में कोई भी सीख ले । उनका पहला आलेख 'नवजीवन' में प्रकाशित हुआ था । उनके आलेखों को पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के विद्यालयों के पाठ्यपुस्तकों में भी समाहित किया गया है । उन्होंने बांग्ला साहित्य को केवल विज्ञान ही नहीं अन्य की विधाओं में समृद्ध किया है । उनमें से कुछ प्रकृति(दर्शन शास्त्र पर चयनित निबंध), जिज्ञासा(विज्ञान पर चयनित निबंध), चरित-कथा(बांग्ला साहित्य के कुछ प्रमुख साहित्यकारों के चयनित निबंध और व्याख्यान संग्रह), विचित्र प्रसंग एवं बंग लक्ष्मीर ब्रतकथा आदि हैं ।दिनांक 06 जून 1919 को उन्होंने इस धराधाम को छोड़ परलोकगमन किया । ऐसे अमर सपूत को नमन ।

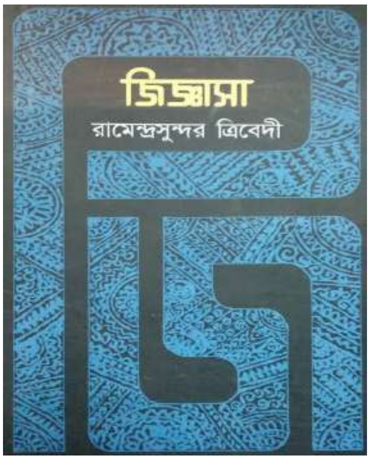

लघु आलेख

भ्रष्टाचार

अर्णव बनर्जी
प्रवर श्रेणी लिपिक

भ्रष्टाचार का यदि हम संधि विच्छेद करें तो इसका विच्छेद होता है भ्रष्ट+आचार । भ्रष्ट का अर्थ है सामान्य परिपाटी के इतर कार्य करना । आचार का अर्थ है आचरण । अर्थात कोई भी ऐसा कार्य जो सामने नियमों के विरुद्ध जाकर किया जाए, जिससे लोक-विभाग और देश का नुकसान हो । भ्रष्टाचार एक ऐसा अनैतिक आचरण है, जिसमें व्यक्ति खुद की छोटी इच्छाओं की पूर्ति हेतु देश को संकट में डालने में तनिक भी देर नहीं करता है। देश के भ्रष्ट नेताओं द्वारा किया गया घोटाला ही भ्रष्टाचार नहीं है अपितु एक ग्वाले द्वारा दूध में पानी मिलाना भी भ्रष्टाचार का स्वरूप है। भ्रष्टाचार के मूल में यदि जाकर देखने का प्रयास करें तो हम पाएंगे कि लालच,लोलुपता,ईर्ष्या आदि इसके कारण है। सरकारी कार्यालयों में भी इसी प्रकार की लालच कार्य करती है । ऐसा नहीं कि व्यक्ति का निजी स्वार्थ ही भ्रष्टाचार का जनक है । की बार परिस्थितियाँ भी ऐसी हो जाती हैं जिसके कारण व्यक्ति न चाहते हुए भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाता है । इसका एक उदाहरण मैं देना चाहूँगा । भारत सरकार के कर्मकचारियों के लिए पहले पेंशन और भविष्यनिधि की व्यवस्था थी । कालांतर में सरकार द्वारा पेंशन के स्वरूप को अंशदायी बना दिया गया तथा भविष्यनिधि को समाप्त ही कर दिया गया । इसका दूरगामी प्रभाव कुछ इस रूप में पड़ा कि पहले कार्मिकों को यदि आकस्मिक पैसे की आवश्यकता होती थी तो भविष्यनिधि से ऋण ले लेता था । बाद में आसान और ब्याजहीन किश्तों में इसका भुगतान हो जाता था । अब जबकि बचत का की ऐसा मार्ग बचा नहीं तो आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे या तो बाजार से ऊंचे ब्याज पर ऋण लेना पड़ेगा । ऐसी स्थिति में उसका भुगतना करने में कठिनाई आने पर व्यक्ति पैसे की व्यवस्था के लिए इधर-उधर हाथ-पैर मारने के लिए मजबूर होगा । ऐसी स्थिति में यदि कर्ज मुक्ति के लिए वह कुछ ऐसा वैसा कार्य कर बैठे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी । यह एक बड़ी विडंवना है जो परिस्थितिजन्य होती है । कुल मिलाकर इस प्रकार की ढेरों परिस्थितयाँ हैं जो भ्रष्टाचार का कारण बन सकती है ।

किसी भी कार्मिक के अतिरिक्त नियोक्ता एवं स्थानीय प्रशासन की भी यह जिम्मेदारी बनती है कि व्यक्ति भ्रष्टाचार में लिप्त न हो इसके लिए समय-समय पर कार्मिकों के हित में कुछ विशेष कार्यक्रम एवं योजनाएँ बनाएँ और उसका संचालन करें । भ्रष्टाचार जहर तो है ही पर इसे खतम करने की दिशा में आज सार्थक सोच और कदम की आवश्यकता है ।

चित्र दीर्घा

नराकास(उपक्रम) द्वारा कार्यालय की गृह पत्रिका 'सेनानी' को पुरस्कृत किया गया । इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल श्री जगदीप धनखड़ के हाथों पुरस्कार ग्रहण करती श्रीमती अपर्णा घोष,वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

चित्र दीर्घा

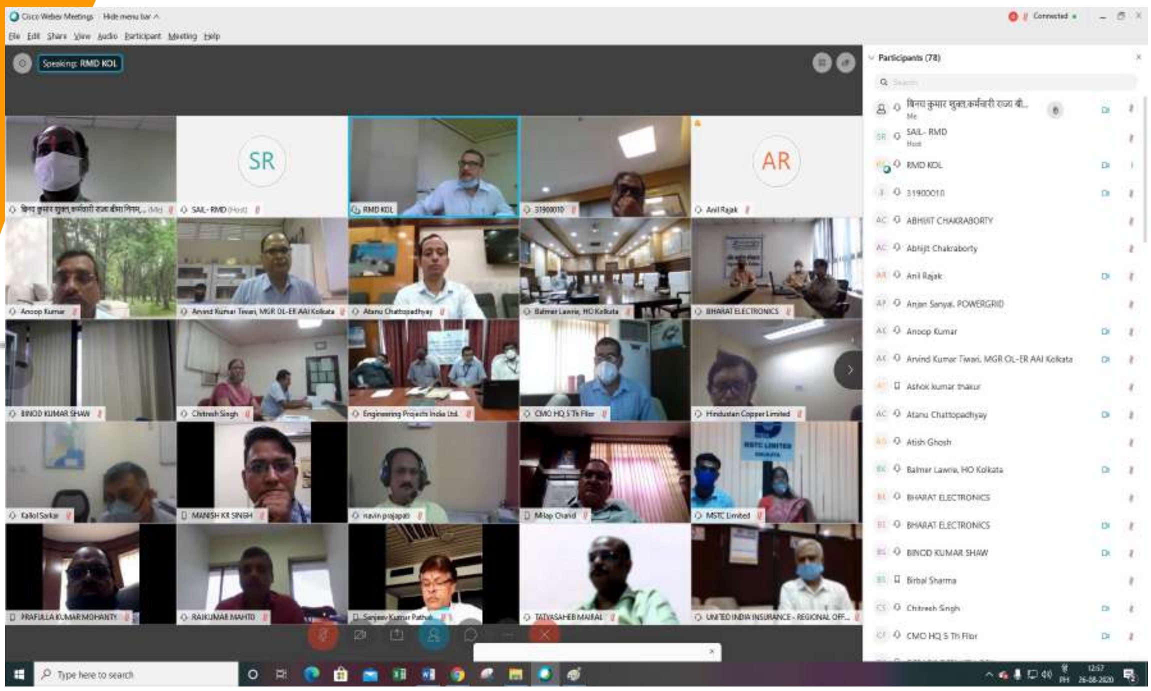

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक (ऑनलाइन)में कार्यालय की भागीदारी

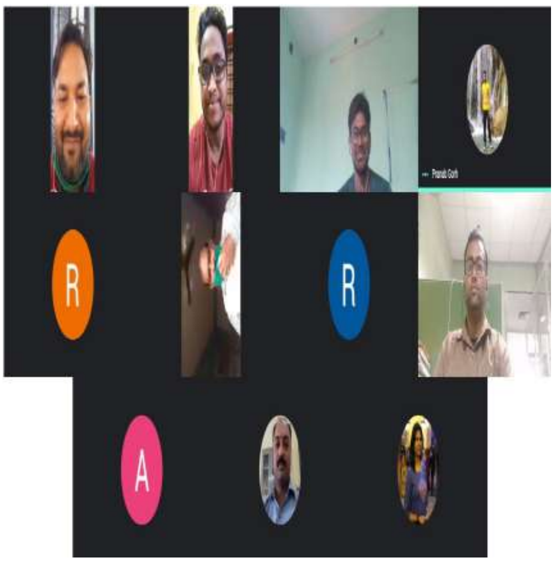

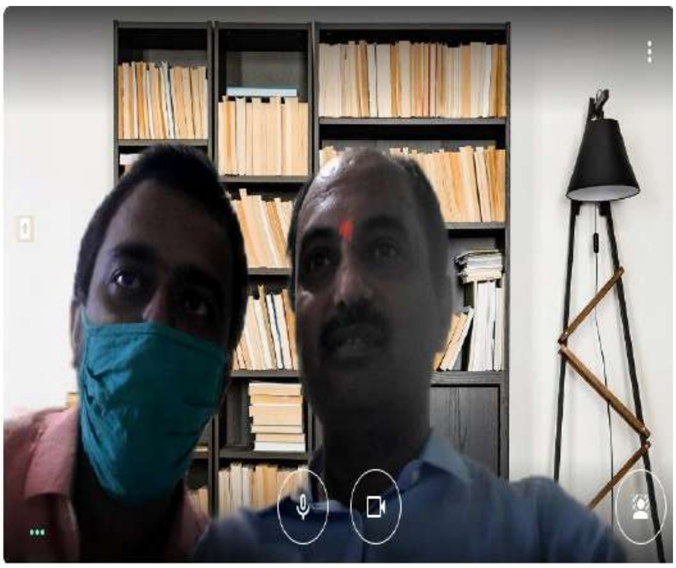

ई-हिंदी कार्यशाला

चित्र दीर्घा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता की झलकियाँ

लघु आलेख

भ्रष्टाचार

राकेश रोशन
अवर श्रेणी लिपिक

ऐसा कार्य जो अपने स्वार्थ सिद्धि की कामना के लिए समाज के नैतिक मूल्यों को ताक पर रख कर किया जाता है, भ्रष्टाचार कहलाता है। भ्रष्टाचार पूरे देश में महामारी की तरह फैल रहा है। यह दीमक की तरह पूरे देश को धीरे-धीरे ख़तम कर रहा है। वर्तमान में कोई भी क्षेत्र भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है। हम कही भी जाये हमें भ्रष्टाचार हर कोने पर मिल ही जायेंगे। जैसे-जैसे हम बड़े होंगे वैसे वैसे हमें भ्रष्टाचार के बहुत से प्रकार देखने को मिलेंगे।एक तरफ जहाँ मनुष्य का आचरण,जल्दी बढ़ने की चाह,आर्थिक परिस्थिति,महत्वकांक्षा,दबाव वश भ्रष्टाचार,कठोर कानून का ना होना भ्रष्टाचार के कारण है तो वहीं दूसरी ओर इसको रोकने के लिए हर क्षेत्र में कार्य से पहले व्यक्ति को शपथ दिलाई जाए ताकि वह इस शपथ को हमेशा याद रखें,संक्षिप्त और कारगर कानून हो, प्रशासनिक मामलों में जनता को भी शामिल किया जाए, सही समय पर सही वेतन बढ़ाया जाए तो रोक संभव है । भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन में बहुत अधिक प्रभाव डाल रहा है। इसके लिए इंसान, जब वो बच्चा होता है तभी से ही नैतिकता का आचरण का पाठ पढ़ना जरुरी है, शिक्षा में भी नैतिकता का पाठ भी जरूरी है ताकि वह किसी भी गलत कार्य में शामिल ना हो और ना ही कोई गलत कार्य करें शिक्षा ही सबसे महत्वपूर्ण साधन है, भ्रष्टाचार को रोकने में उसके साथ ही एक कड़े कानून का होना भी आवश्यक है। इस भ्रष्टाचार की बीमारी को जड़ से ही खत्म करे जिससे भ्रष्टाचार से मुक्त भारत का सपना साकार हो सके।

हरी सब्जी है गुणों का खजाना

पोलीकार्प सोरेंग
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

हमारे शरीर के लिए कई सारे विटामिन एवं पोषक तत्वों की जरूरत होती है। अगर आवश्यक विटामिन पोषक तत्वों की पूर्ति पर्याप्त मात्रा में ना हो तो शरीर विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। विटामिन-सी हमारे शरीर के लिए प्रमुख विटामिनों में से एक माना जाता है। विटामिन-सी प्रमुख रूप से हमारे शरीर में मौजूद कोशिकाओं के विकास में सक्रिय भूमिका निभाती है। इसके अलावा यह रोग-प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाती है। कोरोना महामारी के इस काल में कोरोना से बचने और रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए लोग विभिन्न प्रकार की औषधियों का सेवन कर रहे हैं। किंतु हमारे पारंपरिक खान-पान में ही प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व मौजूद हैं। हरे पत्तों में सबसे ज़्यादा पोषक तत्व पाए जाते हैं। हरे पत्तों वाले साग में आयरन, कैल्शियम, विटामिन्स, एंटीऑक्सीडेंट्स और फाइबर प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। पालक, मेथी, चौलाई, सरसों ऐसे साग हैं जिन्हें हम सर्दियों में अक्सर अपने घरों में इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा भी कई साग या हरे पत्ते ऐसे होते हैं जिनका इस्तेमाल किसी बीमारी से निपटने या स्वास्थ्य अच्छा बनाए रखने में मदद करते हैं। देश के अलग - अलग हिस्सों में ये साग काफी प्रचलित हैं।

सहजनः- सहजन का वैज्ञानिक नाम मोरिंगा ओलिफेरा है। इसे हिंदी में सहजन, सुजना, सेंजन, मुंगा भी कहते है। अंग्रेजी में यह ड्रम स्टिक ट्री के नाम से जाना जाता है। इसके पौधे के प्रत्येक भाग को इस्तेमाल किया जा सकता है। पत्ते, फूल और फल खाने के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। इसके नूतन फल एवं वयस्क फल दोनो ही खाए जाते हैं। हरी पत्तियों को सूखाकर एवं चूर्ण बनाकर भी दाल के विकल्प के रूप में खाया जाता है जो बहुत ही स्वदिष्ट एवं पौषटिकता से भरपूर होता है। इसके बीज, फूल और जड़ का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है। सहजन के पत्ते पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। इनमें प्रोटीन, अमीनो एसिड, एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन और खनिज प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहते हैं। शरीर में उत्पन्न गाँठ, फोड़ा आदि के उपचार के लिए सहजन की

जड़, अजवायन, हींग तथा सौंठ को काढ़ा बनाकर पीया जाता है। इसके काढ़े को पैरों, जोड़ों में दर्द, लकवा, दमा, सूजन, पथरी आदि के उपचार में भी प्रयोग किया जाता है।

कुल्फाः- कुल्फा को घोल या लुनी साग भी कहते हैं। इसे गर्मियों में इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विटामिन ए, बी, सी, प्रोटीन, ओमेगा - 3 फैटी एसिड पाया जाता है। बुखार उतारने, यूरिनरी इनफेक्शन को ख़त्म करने संबंधी बीमारियों में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। दुनिया भर के कई वनस्पति अध्ययन कुल्फा के साग पर किए गए हैं। जंगली भोजन के अमेरिकी विशेषज्ञ ईयूएल गिबन्स ने इसे 'दुनिया का भारत के लिए उपहार' कहा है।

अरबीः- अरबी या घुइंया तो लगभग हर भारतीय परिवार का व्यंजन है लेकिन इसके पत्ते भी काफी स्वादिष्ट होते हैं। इसमें कई पोषक तत्व भी मौजूद होते हैं। देश के कई हिस्सों में अरबी के पत्ते की सब्जी पकाई जाती है। इसके अलावा इसके पत्ते को बेसन में लपेटकर पकौड़ी भी बनाई जाती है।

सुशनी साग - इसे सुसुनिया या सुशनी साग के नाम से जाना जाता है। दिखने में यह तिपतिया घास की तरह लगता है। इसके पत्तों से पश्चिमी बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़, बिहार व झारखंड में सूखी सब्ज़ी या चटनी बनाई जाती है। इसमें विटामिन्स, मिनरल्स और एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं।

पुई साग - पुई या पोई भारत के लगभग प्रत्येक हिस्से में पाया एवं खाया जाता है। यह बारहमासी साग है। देश के अलग-अलग हिस्सों में इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है। इसका अंग्रेजी नाम मालाबार स्पिनेच है। यह कोई फसली पौधा नहीं, बल्कि प्रकृतिक रूप से उगने वाली जंगली बेल है। इसकी पत्तियाँ एवं कोमल डंडल सुखी सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है। कहीं-कहीं पकौड़े बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

चिरोटा - गुजरात और मध्यप्रदेश, छतीसगढ़, झारखण्ड के आदिवासी अंचलों में चिरोटा (वानस्पतिक नाम केसिया टोरा) की पत्तियों का उपयोग भाजी के तौर पर भी होता है और ऐसा माना जाता है कि यह भाजी अत्यधिक पौष्टिक होती है और इसे बरसात के मौसम में अवश्य रूप से आदिवासी रसोई में भाजी के तौर पर पकाया और बड़े चाव से खाया जाता है। चिरोटा की पत्तियों और बीजों का उपयोग अनेक रोगों जैसे दाद-खाज, खुजली, कोढ, पेट में मरोड़ और दर्द आदि के निवारण के लिये किया जाता है। आदिवासियों के अनुसार पत्तियों को बारीक पीसकर दाद-खाज, खुजली, घाव आदि पर लगाया जाए तो अतिशीघ्र आराम मिल जाता है। यदि किसी व्यक्ति को दाद -खाज और खुजली की समस्या हो तो चिरोटा के बीजों को पानी में कुचलकर रोग-ग्रस्त अंग पर लगाने से फ़ायदा होता है। आधुनिक विज्ञान भी इसके एंटी-बैक्टिरियल गुणों को साबित कर चुका है।

ब्रोकली - ब्रोकली फूलगोभी के पौधे की तरह होती है। कुछ ब्रोकली के फूल बैगनी या सफेद रंग के होते हैं किंतु हरे रंग वाले ब्रोकली अधिक गुणकारी होते हैं। इसका उपयोग सलाद, सब्जी एवं सूप बनाने में किया जाता है। इसमें बिटामिन सी एवं डाइट्रीफाइबर्स जैसे पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं। ब्रोकली में कैंसर प्रतिरोधी गुण होते है। इसके अलावा यह डी.एन.ए. कार्य क्षमता तथा उसके सुधार में भी लाभकारी होता है। इसमें कैल्शियम तथा लौह एवं अन्य खनिज तत्व भी पाए जाते हैं।

कलमी साग- इसका वैज्ञानिक नाम आइपोमिया है। इसे वाटर स्पीनाच, स्वांप कैबेज, वाटर कनवालवुलस, करेमू साग आदि नामों से जाना जाता है। यह जलीय सब्जी है। कलमी साग की स्थानीय प्रजाति भी होती है जिसे जमीन पर भी उगाया जा सकता है। इसके पौधे लतेदार होते हैं। इसकी पतियाँ एवं मुलायम तने सब्जी के रूप में प्रयोग किए जाते हैं जो कि खनिज तत्वों एवं विटामिन का उत्तम स्रोत है। कलमी साग में औषधीय गुण पाया जाता है जो उच्च रक्त चाप को ठीक करने में लाभदायक होता है। इसके अतिरिक्त बवासीर, कुष्ठ रोग, पीलिया, ल्यूकोडरमा आदि में भी लाभदायक होता है।

मेथीः- मेथी के पौधे को सब्जी के रूप में खाया जाता है। खांसी, दमा एवं संधिवात के उपचार में इसका इस्तेमाल दवा के रूप में होता है। पेशाब की गड़बड़ी, कब्ज और कटिवात में भी यह लाभदायक है। मेथी के पत्तों की पुलटिस बाहरी व भीतरी सूजन में लाभकारी होती है। मेथी बहुत ही कारगर औषधि है। इसकी पत्तियों की तरकारी औषधीय गुणों से भरपूर होती है। इसके बीजों में

फॉस्फेट, लेसिथिन और न्यूक्लिओ-अलब्यूमिन होने से ये कॉड लिवर ऑयल जैसे पोषक और बल प्रदान करने वाले होते हैं। इसमें फोलिक एसिड, मैग्नीशियम, सोडियम, जिंक, कॉपर, नियासिन, थियामिन, कैरोटीन आदि पोषक तत्व पाए जाते हैं। मेथी पाचन शक्ति और भूख बढ़ाने में मदद करती है। आधा चम्मच मेथी दाना को पानी के साथ निगलने से अपचन की समस्या दूर होती है। मेथी के बीज आर्थराइटिस और साईटिका के दर्द से निजात दिलाने में मदद करते हैं। इसके लिए एक ग्राम मेथी दाना पाउडर और सोंठ पाउडर को थोड़े से गर्म पानी के साथ दिन में दो-तीन बार लेने से लाभ होता है।

पालकः- सर्वसुलभ पालक सब्जी से सभी परिचित ही होंगे। यह बाजार में सस्ते दामों में आसानी से मिल जाता है। यदि यह कहें कि पालक सब्जी गुणों की खान है तो गलत नहीं होगा। प्रोटीन के अलावा इसमें फॉलिक अम्ल, अर्जीनीन, इसोल्यूसीन, मिथियोनीन ट्रिप्टोफेन, ल्यूसीन, लाइसीन फेनिल एलानीन, थियोनीन, हिस्टीडीन आदि अम्ल पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त खनिज लौह, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, बसा एवं फॉस्फोरस पाए जाते हैं। विटामिन ए, बी, तथा सी भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। लौह तत्व के कारण यह खून की कमी को दूर करने तथा रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में कारगर होता है। इसके अतिरिक्त पायरिया को नियंत्रित करने एवं नेत्र ज्योति को बढ़ाने के लिए भी पालक के रस का सेवन किया जाता है। पालक शरीर के रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है। पालक विटामिन-सी का एक प्रमुख स्रोत माना जाता है। यही वजह है कि कई लोगों के द्वारा इस हरी पत्तेदार सब्जी को खाने के लिए जरूर इस्तेमाल किया जाता है।

ककोड़ा: इसे ककोड़ा या ककोड़, कोकड़ोल या ककरोला भी कहा जाता है। बिहार-झारखंड में इसे खक्सी के नाम से भी जाना जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम मोमोरेख डाईगोवा है। यह एक प्रकार की सब्जी है और यह आकार में बहुत छोटी होती है। यह सब्जी स्वादिष्ट होने के साथ-साथ प्रोटीन से भरपूर होती है। इसे रोज खाने से आपका शरीर ताकतवर बनता है। ककोड़ा में मौजूद फाइटोकेमिकल्स स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में काफी मदद करता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है। यह शरीर को साफ रखने में भी काफी सहायक है। इसके अन्य लाभ निम्न प्रकार हैः-

ककोड़ा में प्रोटीन और आयरन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। जिससे वजन घटाने वाले लोगों के लिए यह बेहतर विकल्प है। ककोड़ा में मौजूद ल्युटेन जैसे केरोटोनोइडस विभिन्न नेत्र रोग, हृदय रोग और यहाँ तक कि, कैंसर की रोकथाम में भी सहायक है। आयुर्वेद में कई रोगों के इलाज के लिए इसे औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं। यह पाचन क्रिया को दुरुस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ककोड़ा में मौजूद मोमोरडीसिन तत्व और फाइबर की अधिक मात्रा शरीर के

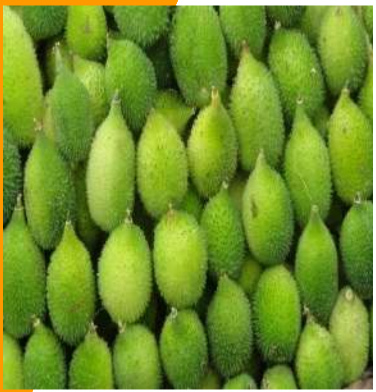

लिए रामबाण हैं। मोमोरेडीसिन तत्व एंटीऑक्सीडेंट, एंटीडायबिटीज और एंटीस्ट्रेस की तरह काम करता है और वजन और हाई ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखता है। यह मधुमेह रोगियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होती है। इसका नियमित सेवन रक्त शर्करा के स्तर को कम करने में मदद करता है। कोकड़ोल आँखों के लिए भी बहुत फायदेमंद है। कोकड़ोल में विटामिन ए प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो कि आँखों को स्वस्थ्य रखने के लिए महत्वपूर्ण घटक है। आँखों की दृष्टि को ठीक करने के साथ ही आँख संबंधी अन्य समस्याओं को दूर करने में भी यह मददगार है।

सरसों सागः- सरसों साग में कार्बोहाइड्रेट, फाइबर मैग्नीशियम, आयरन, कैल्शयम, विटामिन ए सी, डी, बी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है जो हमारे शरीर के विषाक्त पदार्थों को दूर करने में सहायक होता है। इससे रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ता है।सरसों साग में फाइबर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो पाचन क्रिया को ठीक रखता है। यह शरीर में कोलेस्ट्रॉल का स्तर भी कम करता है जो दिल की बिमारी होने की संभवना को कम करती है। सरसों साग में कैल्शियम भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है तथा जोड़ों की समस्या को दूर करने में भी सहायक होता है।

भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार पत्राचार के कुल 14 ऐसे स्वरूप हैं जिन्हें आवश्यक रूप से द्विभाषी रूप में जारी किया जाना अपेक्षित है । वे कागजात हैं -1.सामान्य आदेश 2.संकल्प 3.नियम 4.प्रेस विज्ञप्ति 5.अधिसूचना 6. प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट 7. सूचना 8. निविदा प्रारूप 9. संविदा 10. करार 11.अनुज्ञप्ति 12.अनुज्ञापत्र 13.संसद में प्रस्तुति हेतु प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट एवं 14.संसद में प्रस्तुति हेतु शासकीय कागजात। ऐसे कागजात को मात्र अंग्रेजी में जारी करना राजभाषा अधिनियम के उपबंधों का उल्लंघन माना जाता है । किसी भी कार्यालय में राजभाषा अधिनियम के उपबंधों के अनुपालन की ज़िम्मेदारी कार्यालय प्रमुख की होती है। कतिपय मामलों में राजभाषा अधिनियम के उपबंधों का अनुपालन हर हाल में सुनिश्चित करना अपेक्षित है । इसके अतिरिक्त यह भी अपेक्षित है कि हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाए।

अनूदित कहानी (बांग्ला से हिंदी)

किसी को उसके पेशे से पहचान न दें

(किसी मित्र के फ़ेसबुक वाल से संकलन एवं बांग्ला से हिंदी अनुवाद)

श्याम प्रसाद सेन

सहायक

रिक्शे से उतर कर जैसे ही जेब से किराया निकाल कर देने ही जा रहा था कि अचानक रॉबिन को

आँख पोंछते देखा । मैंने सोचा कि शायद माथे का पसीना पोंछ रहा होगा पर किराया काटने के बाद जब वह पैसे लौटा रहा था, मेरी नजर उसके चेहरे पर पड़ी । यह भाँपते देर न लगी कि वह अपने आंसुओं को बरबस रोकने का प्रयास कर रहा था । रॉबिन हमारे मुहल्ले का सर्वप्रिय रिक्शा वाला है। इस पेशे में अमूमन हर व्यक्ति नशेड़ी होता है पर रॉबिन ऐसा न था । वह किसी प्रकार का नशा नहीं करता था । दिन भर की कमाई घर आकार सीधे अपनी पत्नी के हाथों में दे देता था। उसकी पत्नी के कुशल गृह प्रबंधन के कारण उसकी गृहस्थी बड़े मजे में चल रही थी। उनका तो बस एक ही सपना था, किसी तरह से उनका इकलौता बेटा ऋषि कुछ बन जाए । लिखाई-पढ़ाई में होशियार ऋषि अपने स्कूल के शिक्षकों में भी बड़ा प्रिय था । हालांकि रॉबिन भी किसी जमाने में काफी मेधावी था पर उसकी बुरी किस्मत ने उसे कलकत्ता विश्वविद्यालय से घसीटते हुए पाटुली का रिक्शावाला बना दिया था । आजकल वह दिन भर रिक्शा चलाता है। मौका मिलते ही कागज-कलम लेकर उसपर कुछ न कुछ लिखने का प्रयास करता है । उसके इस प्रयास में गीत, कविताएँ अधिक होती हैं।

हैरान होकर मैंने पूछा, 'क्या बात है रॉबिन? तुम रो क्यों रहे हो? क्या परेशानी आन पड़ी है?'

'-कुछ नहीं दादा ।' कहकर मिथ्या हँसी हँसकर मन के भावों को छुपाने का व्यर्थ प्रयास करने लगा । उसकी परेशानी जाने बिना मुझे भी चैन कहाँ से आती। मैंने कहा-'आओ अंदर चलें,एक गिलास ठंडा पानी पीकर जाना । आज की गर्मी मानों जान लेकर छोड़ेगी। ठंडा पानी शरीर के लिए बहुत जरूरी है । आओ चलें।'

उसने किसी प्रकार की ना नुकूर नहीं की और मेरे साथ घर के अंदर आ गया ।

घर में प्रवेश करते ही मैंने पत्नी को आवाज दी -' दो लोगों के लिए ठंडा पानी लाना।' थोड़ी देर में दो लोगों के लिए नाश्ते की थाली में सजाए हुए लड्डू और ठंडे पानी के गिलास के साथ श्रीमती जी ने प्रवेश किया । पानी पीते-पीते ही मैंने कहा - 'देखो रॉबिन, निःसंकोच अपनी समस्या बोल डालो। इसका समाधान ही देने का प्रयास करूंगा । यदि समाधान न दे पाया तो इसे बढ़ाऊँगा भी नहीं । बोल डालो, मन हल्का हो जाएगा ।'

मेरी बातों से आश्वस्त होकर उसने अपनी जेब से एक कागज निकाल कर मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा- 'दादा जरा देखिए, कैसा लिखा है?

कागज पर लिखे हुए को पढ़ते ही तारीफ कर उठा । वाह! लाजवाब कविता है यह !

'इस कविता का पाठ कर मेरा बेटा ऋषि जादबपुर जोन में प्रथम आया था।'

- 'अच्छा !! किसकी लिखी कविता है ? पहले तो ऐसी कविता मैंने नहीं सुनी है!'

मेरे प्रश्नों का जवाब न देकर रुँधे कंठ से उसने कहा- 'पर ऋषि के स्कूल से कहा गया है कि सब डिवीजन में अब यह कविता नहीं चलेगी । इससे भी कोई अच्छी कविता तैयार करनी होगी। '

-'वह तो ठीक है । पर यह क्यों नहीं चलेगी? मैंने विरक्त होकर पूछा ।

बड़े ही मंद स्वर में रॉबिन ने कहा, 'दादा यह कविता मैंने लिखी है और इसीलिए उसके स्कूल के सर का कहना है कि किसी विख्यात कवि की रचना याद करके आना ।'

'वह तो ठीक है । पर यह कविता क्यों नहीं चलेगी?' - मेरे इस तरह से बोलने पर रॉबिन ने धीरे-धीरे कहा, 'दादा, इसे मैंने लिखा है इसीलिए। उसके टीचर कह रहे हैं कि किसी प्रख्यात कवि की रचना याद करके आना होगा । यदि ऐसा न किया तो फिर उसे प्रतियोगिता से बाहर कर दिया जाएगा ।'

मैंने रॉबिन की रचनाओं के बारे में यदा-कदा पहले भी सुना था पर काभी साक्षात सुनने का मौका नहीं मिला था । हैरान होकर उसके चेहरे की ओर बस ताकता रह गया । दिन भर रिक्शा चलाने वाले लड़के की कलम की धार इतनी सुंदर,अकल्पनीय ! आजतक मैंने ढेरों कहानी, उपन्यास, कविताएँ पढ़ी है। अब इतनी रचनाएँ पढ़ने वाले की सोच तो ऐसी हो ही सकती है । रॉबिन की यह कविता कसी भी नामधान्य रचनाकार की कविता से किसी भी तरह कम नहीं है । पर उसके रिक्शावाला पेशा को देखकर उसकी रचना के साथ ऐसा भेद-भाव, उसे स्वीकृति देने में इतनी दुविधा! मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुई कहा, 'रॉबिन, निराश मत हो। आज शाम को अपने बेटे को लेकर आओ, देखा जाए क्या हो सकता है!'

शाम होते ही ऋषि को लेकर रॉबिन हाजिर हो गया । पता लगा कि विद्यालय से उसे कवि श्रीजात कविता याद करने के लिए कहा गया है । उनलोगों को यकीन है कि यह कविता उसे जादबपुर क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार अवश्य दिलवाएगी । यह कविता उसे सब डिवीजन में भी पुरस्कार दिलवाएगी । पर.. ..

सारी बातें सुनने के बाद मैंने ऋषि से कहा, 'बेटा, श्रीजात की कविता तुम्हें याद करनी होगी। यदि स्कूल वाले पूछें तो कहोगे कि उसका ही पाठ करना है । पर मन ही मन में यह संकल्प कर लो

कि तुम अपने पिताजी की कविता ही सबडिविजन में पढ़ोगे ।' मेरी बातों से रॉबिन हैरत में पड़ गया !!

दादा ये क्या कह रहे हैं? ऐसे में तो स्कूल वाले मेरे बेटे को काभी स्कूल में घुसने ही नहीं देंगे !'

'चिंता मत करो रॉबिन! इस युग में पुरस्कार ही सबकुछ है। कैसे मिला यह बड़ी बात नहीं है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि तुम्हारी कविता का विषय ही कुछ ऐसा है कि वही कवता ऋषि को पुरस्कार दिलवाएगी। और यदि वह सब डिवीजन में प्रथम हो गया तो फिर शिक्षक गण इसके पहने की सारी घटना भूल जाएंगे ।

गुप्त रूप से सारी तैयारी चलने लगी । स्कूल में एक अलग और घर में अलग कविता । बस एक ही रिस्क था । यदि शिक्षकों की बात न मानकर प्रतियोगिता में पुरस्कार न पा सका तो फिर उनका कोपभाजन बनना पड़ जाएगा । पर बिना रिस्क के सफलता का स्वाद कैसे चख सकते हैं । और फिर ऋषि में भी इस प्रकार की चुनौती करने लायक इच्छा-शक्ति का अभाव भी नहीं था ।

प्रतियोगिता के दिन टाउनहाल खचाखच भरा हुआ था । प्रतिभागी, छात्र-छात्राएँ, शिक्षक-शिक्षिका, अभिभावक सब अपने प्यारों को मंच पर बोलता देखने के लिए लालायित बैठे थे । एक-एक कर सभी प्रतिभागी आते गए और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर मंच से उतरते गए । अब बारी रॉबिन के पुत्र ऋषि की थी !

उद्घोषक ने घोषणा कि, 'अब आपके सामने प्रस्तुति देने आ रहे हैं ऋषि मण्डल।' ऋषि मंच की तरफ बढ़ने लगा । इस बीच इसके पिता तनाव के मारे कुर्सी को जकड़ कर बैठ गए । मेरी भी साँसे थम सी गईं थीं।

मंच पर पहुँच कर स्वाभाविक होकर ऋषि ने कविता पाठ किया । निर्णायक मण्डल एक दूसरे की ओर देख रहे थे । लड़के ने कवि का नाम बताए बिना ही प्रस्तुति प्रारंभ कर डाली थी । ऐसा तो उन्होंने कभी सुना नहीं था । उसके स्कूल के शिक्षक शर्म से सिर झुकाकर बैठ गए । पिछले पंद्रह दिनों से इस लड़के को क्या सिखाते रहे और आज जब प्रदर्शन का समय आया तो इसने क्या कर डाला !! ऐसी भूल उससे कैसे हो गई?

उन्हें क्या पता था कि ऋषि गलती से नहीं बल्कि जान बूझकर ऐसा कर गया था । ऋषि की कविता पाठ खत्म हुई। पूरा टाउन हाल तालियों की गूंज से गूंज उठाया । निर्णायक मण्डल भी लड़के की ओर देख काफी देर तक ताली बजाते रहे। पर उसने कवि का नाम तो बोला ही नहीं। तालियों की गूंज बंद होते ही माइक अपनी ओर खींचकर ऋषि ने कहा, 'आपलोगों को मैंने जो कविता सुनाई है उसके कवि हैं रॉबिन मण्डल- मेरे पिता, पेशे से रिक्शा चालक हैं । शुरूआत में मैंने कवि का नाम इसलिए नहीं बोला कि हो सकता है नाम सुनकर पहले से ही लोगों के मन में दूसरी भावना आ जाएगी और चाहकर भी कई लोग इसे ध्यान से सुनना शायद पसंद न करते। ऐसे पिता का पुत्र होने का मुझे गर्व है ।'

निर्णायक मण्डल के सभी लोग अपनी कुर्सियों से खड़े होकर मुग्ध होकर तालियों से स्वागत करने लगे। एक बार फिर सारा टाउनहाल तालियों की गूंज से गुंजायमान हो गया । इस बार की यह

उन्हें क्या पता था कि ऋषि गलती से नहीं बल्कि जान बूझकर ऐसा कर गया था । ऋषि की कविता पाठ खत्म हुई। पूरा टाउन हाल तालियों की गूंज से गूंज उठाया । निर्णायक मण्डल भी लड़के की ओर देख काफी देर तक ताली बजाते रहे। पर उसने कवि का नाम तो बोला ही नहीं ..
तालियों की गूंज बंद होते ही माइक अपनी ओर खींचकर ऋषि ने कहा, 'आपलोगों को मैंने जो कविता सुनाई है उसके कवि हैं रॉबिन मण्डल- मेरे पिता, पेशे से रिक्शा चालक हैं । शुरूआत में मैंने कवि का नाम इसलिए नहीं बोला कि हो सकता है नाम सुनकर पहले से ही लोगों के मन में दूसरी भावना आ जाएगी और चाहकर भी कई लोग इसे ध्यान से सुनना शायद पसंद न करते। ऐसे पिता का पुत्र होने का मुझे गर्व है ।'
निर्णायक मण्डल के सभी लोग अपनी कुर्सियों से खड़े होकर मुग्ध होकर तालियों से स्वागत करने लगे। एक बार फिर सारा टाउनहाल तालियों की गूंज से गुंजायमान हो गया । इस बार की यह गूंज कवि और कविता के अभिवादन के लिए थी। अपने पिता की कविता की तारीफ देख ऋषि की आँखों से खुशी के आँसू बह चले। आजतक किसी भी खुशी के मौके पर मेरे अश्रु नहीं बहे थे, पर आज खुशी के मारे मेरे नयन भी अश्रु न रोक सके। बगल में बैठे रॉबिन की ओर नजर गई, उसके भी अश्रु बह रहे थे जो कई मोतियों से भी कीमती थे ।

डायरी के पन्नों से

31 जुलाई, 2019

अर्चिष्मान घोष
सुपुत्र अपर्णा घोष,वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

देश के सभी अख़बारों के पहले पन्ने पर एक ही खबर छपी थी। हमारे वीर सैनिकों ने सियाचीन की घाटी से घुसपैठ करते आतंकवादियों पर धावा बोलकर उन्हें देश में घुसने से रोका था। देश सुरक्षित था। कैप्टन फैज़ल के घर के बरामदे में तिरंगा लहरा रहा था। लेकिन पूरे मोहल्ले में उल्लास की ध्वनि की जगह करूण रुदन गूंज रहा था। ऐसे वीर सैनिक को खुदा ने खुद की हिफाज़त में जो बुला लिया था। कैप्टन मानो चैन की नींद सो रहे थे। ड्यूटी का आखिरी दिन जो था। रेशमा फूट-फूट कर रो रही थी। बेचारी को ज़िन्दगी और "ज़िन्दगी" का अंतर 23 सालों में ही पता चल गया था। पिछले साल उसने ईद के दिन फैज़ल के साथ नई ज़िन्दगी शुरू की थी। खुदा पर गुस्सा आता है। लेकिन माथा भी तो उन्हीं की मर्ज़ी के आगे टेकते हैं।

धू अल-कदह का महीना था। बादल इस प्रकार घिर आए थे मानो "अज़रैल" खुद आए हैं फैज़ल को लेने। लेकिन वे भी आंसू न रोक सके। बारिश की पहली बूंदे। कैप्टन के सिरहाने कुरान-ए-पाक पर रखा गुलाब मुरझा गया था। मिट्टी की सोंधी सी महक कुछ जानी पहचानी सी लग रही थी। बारिश की बूंदे रेश्मा के रुदन सी तेज़ होने लगी।

"अज़रैल" के वही आँसू, बरसात की वैसी ही तन्हाई, गुलाब की वही मीठी सी खुशबू, नगमा को 20 साल पहले ले गई। नगमा फैज़ल की अम्मी जान है। 1997 में नगमा का निकाह फिरोज़ खान के साथ हुआ था। मेजर फिरोज़ खान। नगमा को अफसोस इस बात का था कि मेजर साहब वतन को अपनों से आगे रखते थे। कार्गिल के युद्ध में देश की सेवा कर अल्लाह के दरबार में हाज़िरी देने चले गए। फैज़ल उस समय सिर्फ 2 वर्ष का था।

नगमा के आँसू शायद उसी दिन सूख गए थे। वह आज गम में डूबी थी मगर चेहरे पर एक अजीब सा सुकून था। बरसात की बूंदे तेज़ हो गई। फैज़ल के रिश्तेदार कैप्टन को अंदर ले गए। रेश्मा घर की दहलीज़ पर नगमा की गोद में सर रखकर बैठ गई। नगमा ने अपने अहसासों को फिरोज़ के साथ ही दफ़ना दिया था। उसने आसमान की तरफ़ देखते हुए रेश्मा के सिर को सहलाया:

'यूँ रोज़ तो कोई सीना खंजर को आबरू में लिए नहीं मुस्कुराता!
क्या छुपी थी ये शादमानी इसी सीने की गहराइयों में,
या हुआ मुकम्मल ये कोई नया हदिया है?'

आलेख

वैश्विक स्तर पर हिन्दी का प्रभाव

मुकेश कुमार
आशुलिपिक

हमारी राजभाषा हिन्दी को न केवल अपने देश में, बल्कि वैश्विक स्तर पर पर्याप्त सम्मान मिलता रहा है। हर भारतभाषी के लिए यह गौरव का विषय होना चाहिए की आज दुनिया के 176 विश्वविध्यालय में हिन्दी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। हिन्दी वहाँ अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान की भाषा भी बन चुकी है। अमरीका के ही 30 से भी ज्यादा विश्वविध्यालयों में भाषाई पाठ्यक्रमों में हिन्दी को महत्वपूर्ण दर्जा मिला हुआ है। दक्षिण प्रशांत महासागर के देश फिजी में हिन्दी को महत्वपूर्ण दर्जा मिला हुआ है फ़िजी में इसे 'फिजियन हिन्दी' अथवा 'फिजियन हिन्दुस्तानी' भी कहा जाता है, जो अवधि, भोजपुरी और अन्य बोलियों का मिला-जुला रूप है। माना जाता है कि विश्वभर में लगभग 6900 मातृभाषाएं बोली जाती हैं, जिनमे से 35-40 प्रतिशत अपने अस्तित्व के संकट से गुजर रही है। दूसरी ओर हिन्दी पूरी दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। विश्वभर की भाषाओं का इतिहास रखने वाली संस्था 'एथनोलॉग के अनुसार चीनी तथा अंग्रेजी भाषा के बाद हिन्दी दुनियाभर में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। फिजी के अलावे भी दुनिया के कई ऐसे देश हैं, जहां हिन्दी बोली जाती है। इन देशों मे नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, सूरीनाम, त्रिनिदाद, मॉरिशस, युगांडा, गुयाना, ब्रिटेन, अमेरिका, न्यूजिलैण्ड, यूएई, साउथ अफ्रीका इत्यादि शामिल है।

अमरीका के अलावा यूरोपीय देशों, एशियाई देशों और खाड़ी के देशों में भी हिन्दी का तेजी से विकास हुआ है और निरंतर हो रहा है। रूसी विद्वानों की हिन्दी में इतनी ज्यादा दिलचस्पी है कि हिन्दी साहित्य जिनका अनुवाद रूस में हुआ है, उतना शायद ही दुनिया में किसी अन्य भाषा के ग्रंथों का हुआ हो। हिन्दी को विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक माना गया है। 'लैंग्वेज यूज इन यूनाइटेड स्टेट्स-2011' नामक एक रिपोर्ट में तो यह भी बताया गया है कि हिन्दी अमेरिका में बोली जाने वाली शीर्ष दस भाषाओं में से एक है, जहां इसे बोलने वालों की संख्या साढ़े छह लाख से भी अधिक है। अमरीका कम्यूनिटी सर्वे की एक रिपोर्ट में बताया गया है की अमेरिका में हिन्दी सौ प्रतिशत से अधिक तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। विश्वभर में हिन्दी की बढ़ती स्वीकार्यता का ही असर है कि वर्ष 2017 में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी पहली बार 'अच्छा' 'बड़ा दिन' 'बच्चा' और 'सूर्य नमस्कार' जैसे हिन्दी शब्दों को सम्मिलित किया गया। अमेरिका की 'ग्लोबल लैंग्वेज मॉनिटर' नामक संस्था ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया था कि अंग्रेजी भाषा में जहां करीब 10 लाख शब्द हैं, वहीं हिन्दी में करीब 1 लाख 20

हजार शब्दों का समृद्ध कोष है और इनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। तकनीकी रूप से हिन्दी को और ज्यादा उन्नत, समृद्ध तथा आसान बनाने के लिए अब कई सॉफ्टवेयर भी हिन्दी के लिए बन रहे है।

भारत में हर 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है, जबकि विश्वभर में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए वातावरण निर्मित करने, हिन्दी के प्रति अनुराग उत्पन्न करने तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी को प्रस्तुत करने के उदेश्य से पिछले कई वर्षों से 10 जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' मनाया जाता है। नागपुर में 10 जनवरी 1975 को 'विश्व हिन्दी दिवस' पहली बार हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने किया था।

हिन्दी ऐसी भाषा है, जो प्रत्येक भारतीय को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाती है। दुनियाभर में आज 75 करोड़ से भी ज्यादा लोग हिन्दी बोलते हैं और जिस प्रकार वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की स्वीकार्यता निरंतर बढ़ रही है, उसे देखते हुए यह कहना असंगत नहीं होगा कि अब वह दिन ज्यादा दूर नहीं, जब हमारी राजभाषा हिन्दी चीन की राजभाषा चीनी को पछाड़कर शीर्ष पर पहुँच जाएगी। विश्वभर में हमारी हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री 'बॉलीवुड' का नाम है, जहां हर वर्ष ढेरों फिल्में बनती हैं और ये फिल्में भारत के अलावा विदेशों में भी खूब पसंद की जाती है। यही कारण है कि बॉलीवुड सितारे अक्सर अपनी फिल्मों के प्रचार-प्रसार के लिए अब विदेशों मे शो आयोजित करते हैं। यूएई में हिन्दी एफएम चैनल वहाँ के लोगों की खास पसंद है। आज दुनिया का वह हर कोना जहां भारतवासी वसे है वहाँ तो हिन्दी धूम मचा ही रहीं है

एशियाई देशों में अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए अब बहुराष्ट्रीय कॉम्पनियाँ भी हिन्दी के प्रचार प्रसार पर खूब ध्यान देने लगी हैं। हिन्दी की बढ़ती ताकत को महसूस करते हुए ही 'अमेजॉन', 'फ्लिपकार्ट' 'स्नैपडील', ओएलएक्स इत्यादि दुनिया की दिग्गज कॉम्पनियाँ हिन्दी जानने वाले ग्राहकों तक अपनी ज्यादा से ज्यादा पहुँच बनाने के लिए ही अब हिन्दी में अपनी 'एप' लेकर आ चुकी है। यह कहना असंगत नहीं होगी कि हिन्दी की बढ़ती प्रतिष्ठा और उपयोगिता के कारण ही यह तेजी से वैश्विक भाषा बन रही है। इंटरनेट पर हिन्दी का, जो दायरा कुछ समय पहले तक कुछ ब्लॉगों और हिन्दी की चंद वेबसाईटों तक ही सीमित था, अब हिन्दी अखबारों की वेबसाईटों ने करोड़ों नए हिन्दी पाठकों को अपने साथ जोड़कर हिन्दी को और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इंटरनेट पर हिन्दी का चलन जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसके मद्देनजर माना जा रहा है कि अगले वर्ष तक हिन्दी में इंटरनेट उपयोग करने वालों की अंग्रेजी में इसका उपयोग करने वालों से ज्यादा हो जाएगी। गूगल का मानना है कि हिन्दी में इंटरनेट पर सामग्री पढ़ने वालों प्रतिवर्ष 94 प्रतिशत बढ़ रहे है जबकि अंग्रेजी में यह 17 प्रतिशत घठ रही है। गूगल के अनुसार 2021 तक इंटरनेट पर 20.1 करोड़ लोग हिन्दी का उपयोग करने लगेंगे। यह हिन्दी के प्रचार प्रसार और वैश्विक स्वीकार्यता का ही परिणाम है कि आज हिन्दी अपनी तमाम प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़ते हुए लोकप्रियता का आसमान छू रही है।

कोरोना और होमियोपैथी उपचार मेरी नजर में

विश्वनाथ तालुकदार
सहायक

'कोरोना' जैसे एक छोटे से शब्द ने पूरी दुनिया में भयानक दहशत पैदा कर दी है । ऐसा लगता है मानो तीसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया हो। ऐसी स्थिति होना अप्रत्याशित भी नहीं है क्योंकि दुनिया के विकसित देशों ने पिछले पचास वर्षों में इस तरह के भयानक संक्रमण का सामना नहीं किया है। इसके कारणों का विश्लेषण करने पर कुछ विशिष्ट जानकारी सामने आती हैं जो निम्नवत हैं:

चीन की भूमिका; डब्ल्यूएचओ की भूमिका; विकसित देशों में उपचारात्मक सेवाओं की कमी और डेटा विश्लेषण में लापरवाही; ड्रग डीलरों के मुक्त राजनीतिक पक्ष; और महामारी में प्रगतिशील राजनीतिक हस्तक्षेप और सूचना का विरूपण।

वायरस के कारण चीन के वुहान में पहले फैलने के बाद से एक रहस्य बना हुआ है। चाहे वह चमगादड़ों से मनुष्यों में आया हो या प्रयोगशाला से, हम अभी भी निश्चित रूप से नहीं जानते हैं। प्रारंभ में, चीन ने इस गोपनीयता को बनाए रखा । समग्र विश्व स्वास्थ्य संगठन की निगरानी उस समय बहुत कमजोर थी। इसके अलावा, चीन पिछले कोरोना वायरस रोगों का स्रोत भी था, इसलिए इस पर फिर से नजर रखना उचित होगा । जैसे-जैसे यह बीमारी दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलती गई, डब्ल्यूएचओ ने चीन से अन्य देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर प्रतिबंध लगा दिया। भारत ने वही कदम उठाया, लेकिन बहुत बाद में । डब्ल्यूएचओ के पास ऐसी वायरल बीमारियों के प्रसार को रोकने के लिए एक मानक प्रक्रिया है, जिसे पिछले बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, सार्स, आदि के मद्देनजर विकसित किया गया था। इस मामले में इसे स्वीकार नहीं किया गया था।

पहली दुनिया के देशों ने अपने उन्नत बुनियादी ढांचे, शिक्षा प्रणाली, नागरिकों के बीच लंबे समय से जागरूकता, स्वच्छता और इन सभी के साथ एक उन्नत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली विकसित की है। इस बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य ने उन्हें संक्रामक रोगों से बचाया पर ऐसे संक्रामक रोगों (public diseases) से अविकसित तीसरी दुनिया को सामना करना पड़ा। वही तस्वीर दक्षिण पूर्व एशिया में है। ये देश अब सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य के खर्च में गिरावट के महत्व के क्रमिक नुकसान से पीड़ित हैं। हम सभी ने ट्रम्प, बोरिस जॉनसन या इटली के प्रधान मंत्री के शब्दों से सीखा है कि विकसित देशों ने बीमारी के खतरों को कम कर दिया है, यहां तक कि इस तरह की असमानता की स्थिति में भी। हवाई अड्डे, हावड़ा-सियालदह स्टेशन और कोलकाता या हल्दिया पोर्ट ट्रस्ट में निगरानी :- यदि किसी को बुखार, बहती नाक आदि जैसे लक्षण हैं या किसी

संक्रमित देश या राज्य से आने का इतिहास है, तो उसे सीधे आईडी अस्पताल ले जाएं और उसका कोरोना के लिए स्वाब परीक्षण करवाएँ । यदि रिपोर्ट को छोड़ दें यदि यह नकारात्मक है, तो प्रकट हुए बीमारी के लक्षणों का इलाज करें । यदि रिपोर्ट में कोरोना के लक्षण दिखते हैं तो फिर बचाव के समस्त उपायों का ध्यान रखें । कहने की जरूरत नहीं है, किसी ने भी इस काम में पीपीई की कमी का उल्लेख नहीं किया, यहां तक कि शिलिगुड़ी बुखार में भी।

बीमारी की निगरानी के लिए जिला-वार, एक उच्च-रैंकिंग स्वास्थ्य अधिकारी प्रत्येक जिले के प्रभारी हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रक्रिया का पालन किया गया था। फिर सभी नमूने एनआईसीईडी को भेजे गए। और यदि आवश्यक हो तो वहाँ से इन बीमारियों के इतिहास को देखते हुए, यह देखा जा सकता है कि पश्चिम बंगाल रोग की रोकथाम के मामले में भारत के पहले तीन राज्यों में से एक था। मृत्यु दर कम थी। यद्यपि उन बीमारियों की घातकता या घातकता 50% के आसपास थी।

जिस तरह से जाना चाहिए था

पिछले अनुभव के साथ, इस बार भी उसी तरह से रोग की रोकथाम के लिए योजना बनाना बेहतर होगा। एचआईवी संक्रमण में एक संदिग्ध की पहचान करने के लिए सबसे पहले रैपिड टेस्ट किए गए। यह फिर से किया जा सकता था। NICED मदद के लिए बैठी है। कुछ दिन पहले, एनआईसीईडी के प्रिंसिपल ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि परीक्षा को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन इस संक्रमण में मुख्य और एकमात्र उपकरण लग सकता है, लेकिन एक दिन इसे हटाना होगा। जब वायरल रोग समुदाय में फैलता है, तो यह धीरे-धीरे अपनी सुस्ती खो देता है और सार्वजनिक जीवन में वायरस के खिलाफ प्रतिरक्षा विकसित करता है। पहले महामारी हवाई थे, संक्रमण को सीधे हवा के माध्यम से प्रेषित करते थे।

ऐसा कहा जाता है कि कोविड बहुत अधिक संक्रामक है, लेकिन बहुत कम घातक है(2-5%तक) । यदि हां, तो इतनी चिंता का कारण क्या है ? हमारी आबादी का लगभग 6% मल्टीड्रग प्रतिरोधी टीबी से संक्रमित है। टीबी सबसे घातक बीमारी है। लेकिन हमें इसकी कोई चिंता नहीं है, न तो राजनीतिक और न ही प्रशासनिक। यहां तक कि डॉक्टर भी इसे स्वीकार नहीं करना चाहते हैं कोविड पर अधिक शोध होगा, टीके निश्चित रूप से निकलेंगे, कुछ उपचार भी। लेकिन अब न केवल डर, बल्कि सार्वजनिक शर्म भी काम में है। जैसे कुष्ठ या टीबी के मामले में एक समूह पीपीई की कमी के बारे में बात कर रहा है। लेकिन पीपीई हर किसी के लिए नहीं है। यहां तक कि अगर आप इन कपड़ों को ठीक से पहनना चाहते हैं, तो भी आपको प्रशिक्षण की आवश्यकता है। एक प्रशिक्षु या एक जूनियर नर्स यह नहीं जानती। अंत में, सैकड़ों समस्याओं के बावजूद, हमारे जैसे देश में इस तरह के संक्रमण को रोकना मुश्किल है लेकिन असंभव नहीं है। उसके लिए, हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा, राजनीतिक-सामाजिक दूरी को बंद करना होगा और संक्रमण को हाथ से रोकना होगा। और यह संभव होगा। मैं आशावादी हूं।

तीन होम्योपैथिक दवाओं का आवधिक अनुप्रयोग। COVID को दबाने के लिए क्या काम करेगा?

आर्सेनिक एल्बम, फॉस्फोरस, ट्यूबरकुलिनम। तीन होम्योपैथिक दवाओं के 'क्रमवार' अनुप्रयोग के साथ देश भर में एक 'नैदानिक परीक्षण' शुरू किया जा रहा है। COVID पर भारत की सर्वोच्च टास्क फोर्स और सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन होम्योपैथी द्वारा हरी बत्ती दी गई थी।

आयुष मंत्रालय ने बहुत पहले आर्सेनिक एल्बम 30 की सलाह दी थी। जैसा कि बाद में देखा गया, नोबल कोरोना वायरस इतना मजबूत है कि आर्सेनिक अकेले नहीं प्रभावी होता है। नतीजतन, इसके लिए एक साथी खोजने का समय है। इस खोज में ट्यूबरकुलिनम और फॉस्फोरस नाम सामने आए। डॉक्टरों का दावा है कि इन दोनों दवाओं के जोड़ से आर्सेनिक की प्रभावशीलता बढ़ जाएगी। प्रतिरोध की 'जीवन रेखा' लंबे समय तक चलने वाली होगी।

होम्योपैथी चिकित्सा रोगजनकों पर आधारित नहीं है। लक्षणों पर आधारित है। इसका मतलब है कि अगर SARS-CoV-2 वायरस अपने चरित्र को बदलता है तो भी कोई समस्या नहीं है। यह दवा अभी भी काम करेगी। श्वसन संबंधी लक्षणों के अलावा, बुखार, खांसी और श्वसन संबंधी समस्याएं इसके मुख्य लक्षण हैं। यह फेफड़ों पर हमला करता है।

लक्षण आमतौर पर सूखी खांसी और बुखार के साथ शुरू होते हैं, इसके बाद श्वसन संबंधी समस्याएं होती हैं।

लक्षण प्रकट होने में आमतौर पर औसतन पांच दिन लगते हैं। बुखार एक वायरल संक्रमण से शुरू होता है, उसके बाद सूखी खांसी होती है। लगभग एक हफ्ते बाद सांस की तकलीफ शुरू होती है । कई मरीजों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है।

कोरोना के नए लक्षण लगातार दिखाई दे रहे हैं। शोधकर्ताओं ने कोरोना वाले रोगियों का अनुभव और परीक्षण करके इन नए लक्षणों पर रिपोर्ट की है। बुखार-सर्दी-सिरदर्द, सांस की तकलीफ के इन सामान्य लक्षणों के अलावा, पिछले कुछ दिनों में कुछ और नए लक्षण देखे गए हैं। ये नए लक्षण दुनिया भर के कई कोरोना रोगियों में दिखाई दे रहे हैं।

इन 9 लक्षणों के बारे में जानें :-

1) पैर में चोट के निशान : पैर भी कोरोना संक्रमण के लक्षण दिखा सकते हैं। पैर की अंगुली में चोट लगने के बाद ऐसी स्थिति होती है; हालांकि यह कोरोना से प्रभावित है, लेकिन यह इस तरह की आकृति ले सकता है। जनरल काउंसिल ऑफ आधिकारिक बाल रोग विशेषज्ञों (फुट केयर स्पेशलिस्ट) स्पेन के कॉलेज ने पिछले गुरुवार को एक बयान साझा किया। वहां, यह कहा जाता है, कोरोना वाले रोगियों के पैरों पर कुछ निशान पाए गए थे। ये पर्पल ब्रूज़ और निशान जैसे दिखते हैं। ये आमतौर पर पैर की उंगलियों पर देखे जाते हैं। हालांकि, बिना किसी संकेत के, ये फिर से अच्छे हो सकते हैं।

2) बार-बार टॉयलेट जाना : कोरोनावायरस का एक और हल्का लक्षण है बार-बार शौचालय जाना। यह लक्षण कई नए रोगियों में देखा जाता है। मामले के बारे में डॉ. डायना ने कहा कि पाचन समस्याओं और आंत्र की आदतों में बदलाव - विशेष रूप से पतले मल और लगातार मल त्याग - कभी-कभी कोरोना के प्रारम्भिक लक्षण हो सकते हैं। यह कई रोगियों में देखा गया है। कई मामलों

में, शुरू में दस्त के लक्षण देखे गए थे, बाद में परीक्षणों से पता चला कि वे काविद -19 संक्रमित थे।

3) अंडकोष में दर्द : कोरोनावायरस का तीसरा हल्का लक्षण अंडकोष में दर्द है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के शोधकर्ताओं ने एक 42 वर्षीय व्यक्ति का परीक्षण किया है जो गंभीर वृषण दर्द के साथ अस्पताल में भर्ती था और इसे कोरोना पॉजिटिव पाया गया था। हालांकि, डॉक्टरों को उसके अंडकोष में कोई समस्या नहीं मिली। हालांकि, सीटी स्कैन ने उनके फेफड़ों को नुकसान दिखाया। दो दिन बाद, आदमी को कैविड -19 पॉजिटिव पाया गया।

4) त्वचा में जलन : ब्रिटेन में कई कोवीड -19 रोगी जल गए हैं। यह कोरोना का बिल्कुल नया संकेत है। यह लक्षण पहले नहीं देखा गया है। हालांकि ब्रिटेन की स्वास्थ्य एजेंसी इसकी निगरानी कर रही है। अधिकारी को अभी तक एक संकेत के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है। जलने के अलावा, कई लोग फिर से त्वचा पर ठंड महसूस कर रहे हैं।

5) पेट में दर्द : कोरोनावायरस वाले लोग गंभीर दर्द का अनुभव करते हैं। खासतौर पर हाथ और पैरों में । सामान्य बुखार से भी हाथ और पैरों में दर्द हो सकता है। हालांकि, चूंकि इस समस्या को कोरोनावायरस के लक्षण के रूप में जाना जाता है, इसलिए इसे अनदेखा करने का कोई तरीका नहीं है।

6) आंखों में जलन : नींद की कमी, तनाव या रेटिना की समस्याओं के कारण आंखों में जलन हो सकती है। हालांकि, दुनिया के विभिन्न देशों में, आंखों में जलन को कोरोना के लक्षण के रूप में भी देखा गया है। कोरोनावायरस वाले कई रोगियों के शारीरिक लक्षणों में आंखों में जलन थी।

7) कान का दर्द : कान के दर्द को कोरोनावायरस के एक और लक्षण के रूप में पहचाना गया है। कानों में गंभीर या हल्का दर्द हो सकता है। कान के अंदर दबाव महसूस हो सकता है। अगर कान में दर्द हो, तो मालिश न किया जाए ऐसा विशेषज्ञों की राय है ।

8) भूख की कमी : कोरोनावायरस के लक्षणों में से एक भूख की कमी भी है। इसमें भूख का कोई अहसास नहीं होता है। इससे शारीरिक कमजोरी और थकान हो सकती है।

9) सरदर्द : सामान्य फ्लू से सिरदर्द हो सकता है। डिहाइड्रेशन से उस समय सिरदर्द भी बढ़ सकता है। पेरासिटामोल लेने से यह दर्द ठीक हो जाता है। हालांकि, अगर आपको कोरोनोवायरस के कारण सिरदर्द होता है, तो पेरासिटामोल आमतौर पर दर्द को कम नहीं करता है।

क्या कोरोना रोकने में ARSENICUM ALB 30 पूर्णतः प्रभावी है ?

चिकित्सा क्षेत्र में परिपत्र को लेकर विवाद

कई लोगों ने शुरू में सोचा था कि होम्योपैथी एक कोरोना एंटीडोट के रूप में अच्छी तरह से काम करेगी। कुछ दिनों पहले, केंद्रीय होम्योपैथिक परिषद ने कहा कि मानव शरीर की प्रतिरक्षा बढ़ाने के लिए दवा आर्सेनिक एल्बम 30 महत्वपूर्ण है। दवा ट्यूबरकुलिनम, जो लगातार सर्दी और खांसी से राहत देने में सक्षम है, फॉस्फोरस की प्रभावशीलता को बढ़ाता है। नतीजतन, जब आर्सेनिकम, फॉस्फोरस, और ट्यूबरकुलिनम (एपीटी) नियमित अंतराल पर लगाए जाते हैं, तो प्रतिरोध बहुत

मजबूत हो जाता है और लंबे समय तक रहता है। नतीजतन, दीर्घकालिक प्रतिरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। कई लोग सोच सकते हैं या कह सकते हैं कि होम्योपैथिक दवा के दुष्प्रभाव नहीं होते हैं, यह पूरी तरह से गलत है और इसके दुष्प्रभाव हैं। मेरे कई परिचितों ने मुझे बताया है कि आर्सेनिकम के प्रयोग के बाद उनके शरीर पर चकत्ते हैं और खुजली के गंभीर लक्षण प्रकट होने लगे थे । यह समस्या उन्हें इतनी गंभीर लगी कि उन्हें यह डर सताने लगा कि दवा शरीर में किसी अन्य बीमारी को बढ़ा सकती है । यदि ऐसी कोई पार्श्व प्रतिक्रिया(साइड इफेक्ट) हो तो Nux Vomica 30/5gm लेना उचित होगा, इसे पाँच दिन तक दिन में तीन बार खाएं ।

हालाँकि, मुझे लगता है कि आर्सेनिक एल्बम के बजाय Chininum Ars 30 का प्रयोग अधिक उपयुक्त है। हालाँकि, होम्योपैथी में बीमारी के संकेतों और लक्षणों के अनुसार इलाज किया जाता है। जिसमें बुखार की पहली अवस्था में Belladonna-30 या Aconitum nap 30 , रोगी के गले में खराश होने पर Belladonna-30 , Mercurius solubilis 30, Merc. Proto Iod 30 , दुर्गंधयुक्त पतले मल में Chininum Ars 30 का प्रयोग किया जा सकता है, यदि खांसी, श्वासावरोध और निमोनिया होता है, तो Antim Tart 30 के साथ Carbo vegetabills 30 दें।

बीमारियों से लड़ने और उनके प्रति शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का विकास करने के लिए होम्योपैथी एक सशक्त माध्यम है, इसका प्रयोग कई मैने में लाभकारी है यह रोगों से लड़ने के लिए सशक्त पासवर्ड हो सकता है।

आलेख

आत्म विश्वास

सौमिक मिश्र
प्रवर श्रेणी लिपिक

आत्मविश्वास मन की एक ऐसी दशा है जिसमें व्यक्ति प्रारंभ से ही अपनी क्षमता के समस्त हद पार करने की क्षमता रखता है, साथ ही यह खुद से प्रेम करने पर ही प्रकट होता है । अपनी क्रियाओं पर संदेह न करने की आदत आप में तभी आ सकती है जब आप खुद को खुद से ही प्रेम करें । आत्मविश्वास सफलता की कुंजी भी है । इसे हम सफलता का प्रथम सोपान भी कह सकते हैं । जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास है वह आधी जंग तो वैसे ही जीत जाता है । हम विद्यालयों, कार्यालयों एवं अन्य स्थानों पर ऐसे लोगों को अक्सर देखते हैं जो आगे बढ़कर कार्य करने की इच्छाशक्ति, अधिक प्रखर एवं तत्पर तथा बड़े ही आत्मविश्वास से निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। ऐसे व्यक्ति दूर से ही पहचाने जाते हैं । पर जब ऐसे व्यक्ति की बात आती है जो खुद पर कभी भरोसा नहीं करते हैं ऐसे लोगों की सफलता में संदेह होता है । ऐसे लोग आलोचना एवं उपहास के पात्र बनते हैं । ऐसे लोग पुनः उठ खड़े होने का हिम्मत भी नहीं दिखा पाते हैं । जो व्यक्ति आत्मविश्वास का धनी होता है वह जीवन के हर क्षेत्र में कामयाबी पाता है और इस कामयाबी का श्रेय भी । अपने पसंद का रोजगार, अवसर पान या सृजन करना ऐसे लोगों की फितरत होती है । आत्मविश्वास एक तरफ असफलताओं के बाद संभालने का अवसर तो देती ही है, साथ ही असफलताओं में भी अवसर तलाशने का भी मौका दे देती है, और क्रमशः मन में यह भाव भर देती है कि हर नए प्रयास में सफलता चरण चूमेगी ही। हालांकि आत्मविश्वास अपने आप में एक अनमोल रत्न है पर अति-आत्मविश्वास और आत्मविश्वास में व्यक्ति को अंतर करना भी आना चाहिए । अति हमेशा बुरी होती है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो । अति-आत्मविश्वासी लोग आलोचनाओं के आधार पर आत्ममूल्यांकन करने से बचते हैं और यही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी प्रमाणित होती है । जो लोग अपनी कमियों का आँकलन करने और उन्हें दूर करने से बचते हैं, ऐसे लोग खुद का ही नुकसान कर डालते हैं और उनकी यह आदत उन्हें असफलता के अंधकार की ओर धकेलने लगती है। अपनी कमियों को सुधारने की आदत व्यक्ति में सही मात्रा में आत्मविश्वास और आत्म प्रेम का गुण भर देती है जो आगे चलकर उन्हें सफल तथा संतुष्ट बनाती है । आत्मविश्वास प्राप्त करने का मार्ग पूर्ण रूपेण व्यक्तिगत एवं व्यक्ति का आंतरिक निर्णय है अतः किसी प्रकार की प्रेरक बातों से व्यक्ति पर कोई विशेष प्रभाव तबतक नहीं पड़ सकता जबतक व्यक्ति खुद में बदलाव न करे । आत्मविश्वास व्यक्ति में क्रमिक रूप से जागृत होता है । पर जैसे ही आप खुद पर भरोसा करना प्रारंभ कर देते हैं, आपको जीवन एवं कैरियर के क्षेत्र में ऊँचाइयाँ छूने से कोई रोक ही नहीं सकता ।

चित्र : दीक्षा शुक्ल, पुत्री श्री बिनय कुमार शुक्ल, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

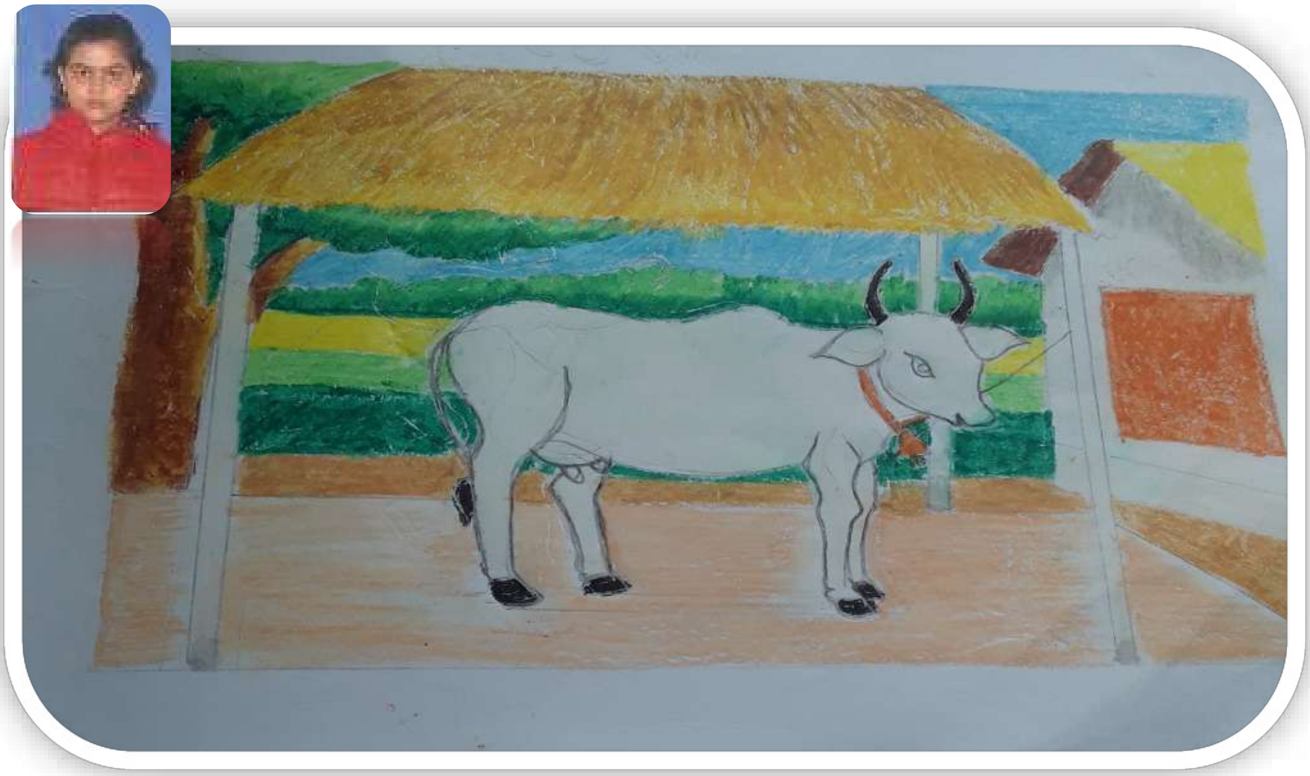

चित्र : श्रेया धन्वन्तरी, पुत्री श्री श्रीकांत धन्वन्तरी, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

बच्चों की तूलिका से

चित्र : सुनिधि बर्मन, पुत्री श्री सुमित बर्मन, सहायक

चित्र : रोहित बिश्वास, पुत्र श्री बिप्रजीत बिश्वास, प्रवर श्रेणी लिपिक

चित्र : रोहित बिश्वास, पुत्र श्री बिप्रजीत बिश्वास,प्रवर श्रेणी लिपिक

चित्र : सुनिधि बर्मन, पुत्री श्री सुमित बर्मन ,सहायक

बच्चों की तूलिका से

चित्र : शुभम बर्मन, पुत्र श्री सुमित बर्मन, सहायक

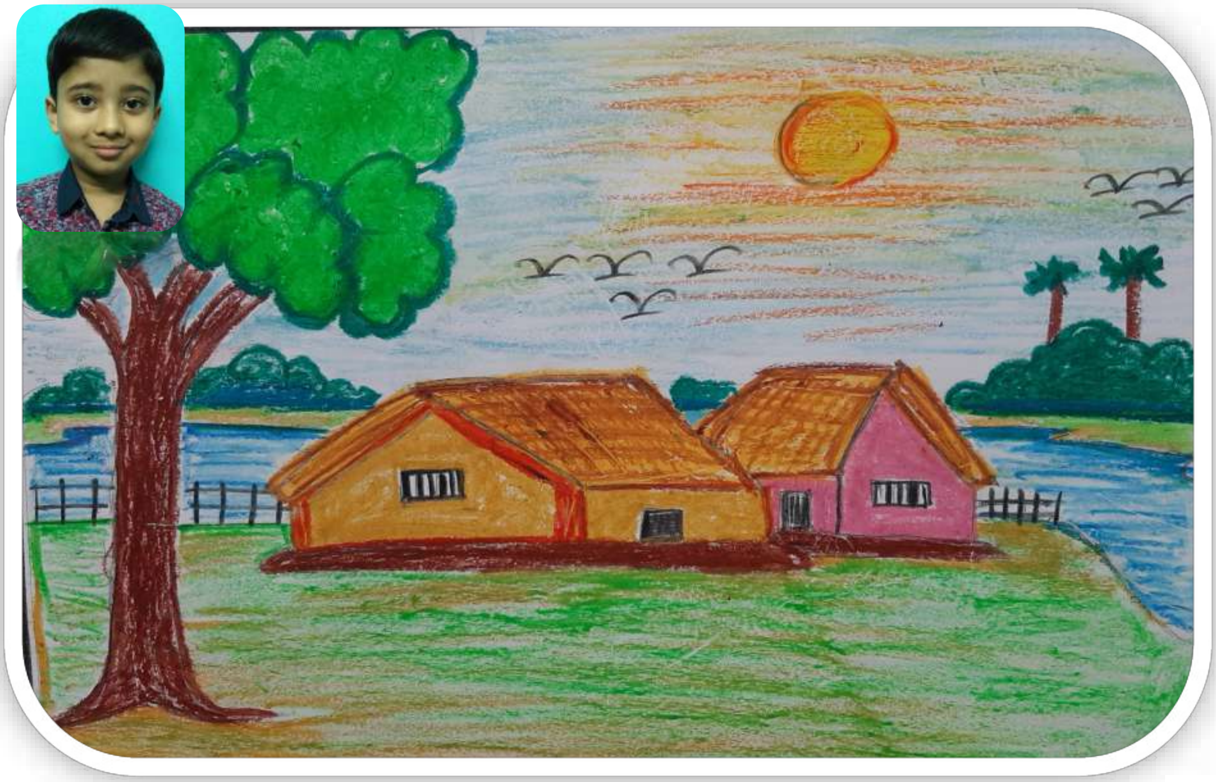

चित्र : स्वप्निल दास, पुत्र श्री प्रद्युत दास, सहायक

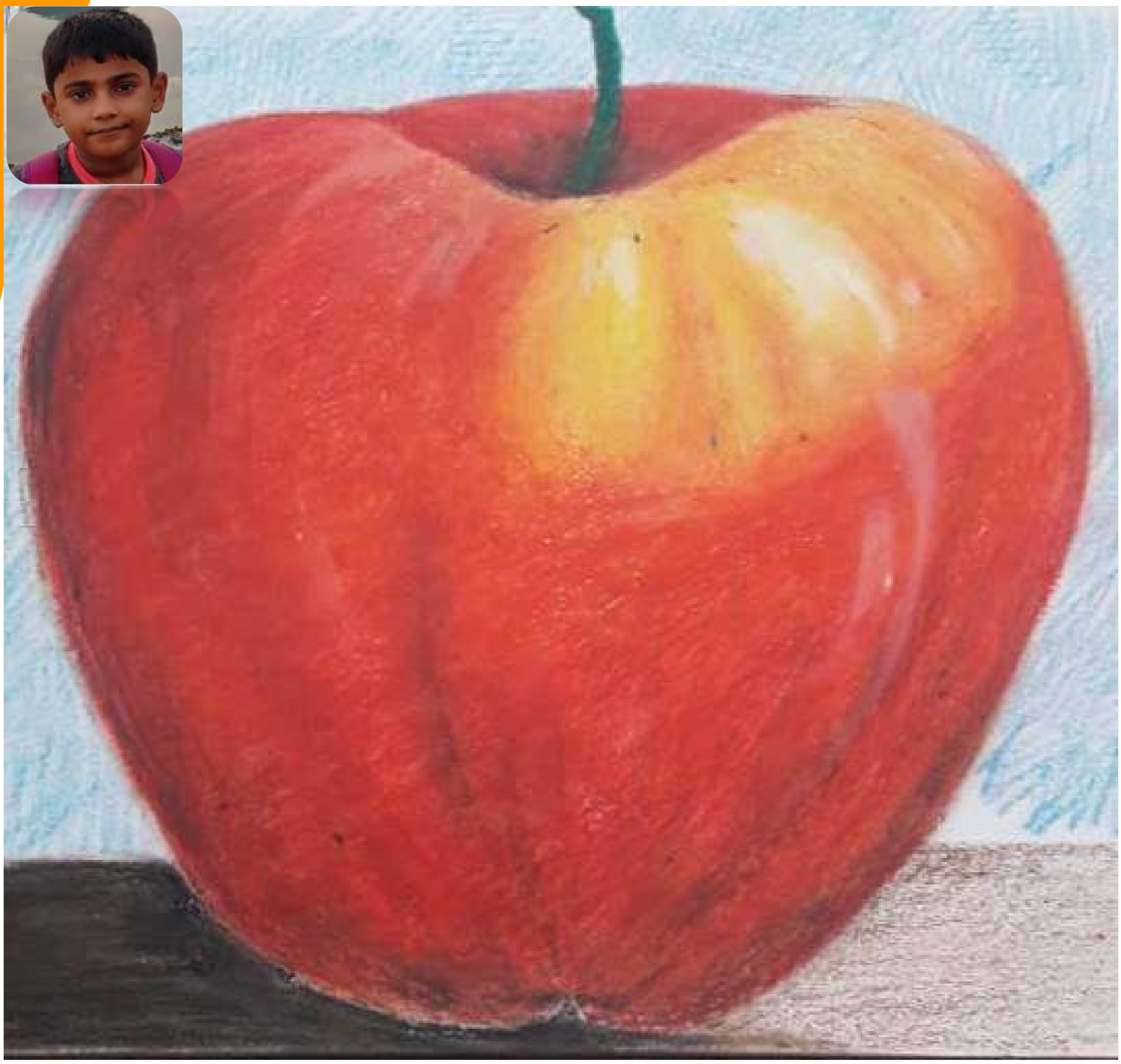

चित्र : प्रियम दास , पुत्र श्री प्रसेनजीत दास, बिश्वास सहायक